नवम्बर 2009 ■ Rs.20/-

चन्दामामा

Visit : www.chandamama.com/parle

बूमर स्प्लैश का नया जूसी नटखट फ्लेवर कौन सा है?

- ▪ कच्चा आम ▪ कच्चा केला ▪ कच्चा संतरा ▪ कच्चा अनार

नाम:.. पता:..

....

फोन नं:.. ई-मेल आई डी:..

अपने जवाब हमें इस पते पर भेजें: Chandamama India Ltd., New No 2/513(old no 3/396), Sandeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelankarai, Chennai - 600 041 या फिर ई-मेल करें boomerfunzone@wrigley.com

अंतरंग

चन्दामामा

सम्पुट-६० नवम्बर २००९ सञ्चिका -११

✽ पाठकों का पन्ना ...०६
✽ हो हो हो - बाल दिवस! ...०७

क्लासिकी
✽ तीन सिरोंवाला राक्षस (वेताल कथा) ...११
✽ आर्य-२ ...१७
✽ रामायण (युद्ध काण्ड) ...२१
✽ फलदायी शुभ कार्य-२ (जातक कथा) ...२८

क्रियाकलाप
✽ तेज़ फार्मूला ...३०
✽ यूरेका ...३१
✽ चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१० ...३२
✽ चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...३३

लघु कथाएँ
✽ पशुता ...३४
✽ जल्दबाज़ी ...३७
✽ कोयले की कहानी ...३८

भारत निर्देशिका
✽ लड़ने वाला पेशवा (इतिहास के पन्ने) ...४४
✽ चूँ चूँ का डिब्बा ...४८

धारावाहिक
✽ युद्ध की सभा (अनुनिर्वा) ...५६

समाचार
✽ खेल दीप-स्तम्भ ...६२
✽ उदीयमान सितारा ...६४
✽ खेल-कूद का इतिहास ...६५
✽ समाचार झलक ...६६

विविध
✽ चार निर्भीक ...७१

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/medium will be dealt with according to law.

०८
क्लासिकी
पंडित के मुख से (बंगाल की एक लोक कथा)

४०
लघु कथाएँ
हफ़्ते भर में विवाह

५०
धारावाहिक
पाताल दुर्ग

६७
विविध
दयालु ईश्वर की संतान (हास्य-कथा)

Visit us at : http://hindi.chandamama.com

अभिलेखन एवं संस्मरण

हैलो दोस्तो !!!

हमें उम्मीद है कि आपने दिवाली बहुत धूमधाम से मनाई होगी। अपने अनुभव हमें लिख भेजिए! हमें बेहद खुशी होगी। हम आशा करते हैं कि खुशियों भरा समय बिताते हुए आपमें से किसी ने भी पटाखे फोड़कर ध्वनि प्रदूषण नहीं किया होगा। हमें खुशियाँ मनाते हुए ध्यान रखना चाहिए कि किसी को तकलीफ़ न हो।

इस महीने की १४ तारीख को हम अपने पहले प्रधानमंत्री ''चाचा नेहरू'' के जन्म की वर्षगाँठ मनाते हैं। सभी जानते हैं कि वे बच्चों से बहुत प्यार करते थे। वे हमें *चन्दामामा* को बेहतर बनाने तथा कुछ नया करते रहने की प्रेरणा देते हैं। संयुक्त राष्ट्र २० नवम्बर को विश्व बाल दिवस के रूप में मानते हैं। जिज्ञासु प्रवृति के लोगों के लिए ९ नवम्बर विश्व आविष्कार दिवस के तौर पर जाना जाता है। यह दिन हॉलीवुड एक्ट्रेस एवं आविष्कारक हेडी लामर्र के जन्म की वर्षगाँठ है। वह रोज़मर्रा की ज़िंदगी में आविष्कार करने वालों की अगुवा थी क्योंकि मुख्य रूप से वह अपने विचार को समझने की कोशिश करनेवालों में से थी। उसकी खोज ''बारंबार विषय परिवर्तन प्रक्रिया'' के नाम से जानी जाती है जिसका आज भी हम प्रतिदिन इस्तेमाल करते हैं और हमारे मोबाइल फ़ोनों की एक संपूरक प्रक्रिया है।

संयुक्त राष्ट्रों के अनुसार विश्व दूरदर्शन मंच की याद में २१ नवंबर विश्व दूरदर्शन दिवस के रूप में जाना जाता है।

हम अपने सम्पादकीय में अपने सभी पाठकों को महीने के कुछ खास दिनों के बारे में बताते हैं तथा इतिहास में घटी कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं की याद को तरोताज़ा करने के लिए उनके बारे में विचारविमर्श करते हैं। हम सभी को एक डायरी बनानी चाहिए जिसमें हम इस प्रकार की स्वयं अनुभव की हुई महत्त्वपूर्ण घटनाओं को सहेज सकें। फिर एक लंबे अर्से के बाद उन्हें पढ़ना काफी रोचक होगा।

अपने पिछले सम्पादकीय में हमने जल संरक्षण का ज़िक्र किया था। आपमें से कितने लोगों ने जल संरक्षण शुरू किया। क्या आप इस बारे में अपने जीवन के वास्तविक अनुभव लिखकर हमें भेज सकते हैं?

- संपादक

नवम्बर २००९ Rs.20/-
Founded by **B. Nagi Reddi and Chakrapani**

Editor & Publisher : Prashant Mulekar
Associate Editor : Sowmya Rajendran
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : T. Venkatesan
Asst. Editor-Copy & Pre-Production : R. Sudha
Creative Writer : R. Vaasugi
Layout Designers : B. Thirumal, K. Narendra

Sanjay B Thorat : ***Head - Sales and Circulation***
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Mobile +91 9821017787
email : sanjay.thorat@chandamama.com
Rajendra K Jadhav : ***Asst. Manager - Circulation***
Mobile +91 9320565048
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi : **Sushil Sharma,** ***Circulation Manager-North,*** Mobile +91 99110 91022
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
Goyal Business Centre, C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bangalore : **P. Murali,** ***Asst. Circulation Manager - Karnataka***, Mobile +91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street, Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage, Bangalore-560094,
Phone +91 80 6655 1000
email:murali.p@chandamama.com
Kolkata : **Ananth Prakash,** ***Circulation Manager-East,*** Mobile +91 98362 82202, 98351 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Ahmedabad : **Kalpesh Raval,** ***Sales Officer-Circulation*** Mobile +91 98245 19946
email : kalpesh.raval@chandamama.com
Chennai : **K. Ravishankar,** ***Sales Officer - Circulation,*** Mobile +91 98414 00981
email : ravishankar.k@chandamama.com
Content Head - Online : **Sowmya Bharadwaj**
email : online@chandamama.com
For Marketing Enquiries :
email : marketing@chandamama.com
Advertisement :
email : sales@chandamama.com
Subscription Queries:
e-mail : subscription@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam
Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Production Executive : Panchakshari R Math
Head Office : **CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
2/513 (Old 3/396), Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelankarai, Chennai - 600 041 Phone +91 44 43992828, Fax +91 44 43992829
Email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Printed and Published by Prashant Mulekar at Shruti Art Pvt. Ltd., Unit No.1, Gupta Mills Estate, Devidayal Industrial Compound, Darukhana, Reay Road (East), Mumbai - 400 010 on behalf of Chandamama India Limited, 2/513, Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Thiruvanmiyur, Chennai - 600 041. Editor : Prashant Mulekar

पाठकों का पन्ना

चन्दामामा में आपने कथा के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान का भण्डार भर दिया है, जो किशोरों और छात्र-छात्राओं के लिए अन्यत्र दुर्लभ है। किन्तु इस नए प्रयोग के कारण *चन्दामामा* की परम्परागत चित्र कथा शैली की कहानियों में कमी हो गई है। कामिक्सवाली कहानियाँ और चुटकुले तो कई पुस्तकों में पढ़ने को मिल जाती हैं किन्तु *चन्दामामा* की परम्परागत चित्र कथा शैली की कहानियाँ किसी भी पुस्तक में नहीं मिलती हैं। इसलिए सम्पादकजी से निवेदन है कि नए-नए प्रयोग के द्वारा आपने ज्ञान-विज्ञान का भण्डार तो भर दिया है किन्तु कहानियाँ कम कर दी हैं, जिनकी हमें हर माह प्रतीक्षा रहती है। अतः *चन्दामामा* में और पृष्ठ बढ़ाकर कहानियों की क्षति को पूर्ण किया जाए। ***- गोल्डी भावसार, बरेली, मध्य प्रदेश***

मैं *चन्दामामा* मासिक पत्रिका बरसों से पढ़ रहा हूँ। इसकी कहानियाँ मुझे बेहद पसन्द आती हैं। खासकर वेताल कथा पढ़ने को मन उत्सुक रहता है। मेरा सुझाव है कि *चन्दामामा* में कविता, गीत के एक-दो चित्रमय पन्ने होने चाहिए। जैसे दशहरा, दीपाली, क्रिसमस के गीत *चन्दामामा* के पाठकों द्वारा लिखे होने चाहिए। इसमें वर्ग पहेली शुरू करें और इनाम भी एक हजार रुपया नकद कम से कम रखें। तब आपके पाठकों में इसे भरने की उत्सुकता बढ़ेगी।

- राजकुमार शर्मा, नई दिल्ली

सितम्बर महीने में प्रकाशित सब कहानियाँ मुझे बेहद पसन्द आईं। विक्रम वेताल की कहानी ने तो पत्रिका में चार चाँद लगा दिये है।

- एस एम एस द्वारा सुनिल पाटिल, नागपुर

आप अपना विचार
feedback@chandamama.com
पर ई-मेल से भी भेज सकते हैं अथवा MLANG <space> <Name, Age> <space> <HIN your feedback> लिखकर 54646 को SMS भी कर सकते हैं।

हो हो हो - बाल दिवस !

हम सभी जानते हैं १४ नवंबर, जवाहरलाल नेहरू का जन्म दिन, बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। लेकिन क्या तुम जानते हो, संसार के अन्य हिस्सों में बाल दिवस कैसे मनाया जाता है?

शम्भाला की जादुई राजधानी में, बच्चे राजा द्वारा आयोजित भोज के मुख्य अतिथि होते हैं। राजा बच्चों को बहुत पसंद करते हैं और उन्हें खुश करने के लिए छोटी मोटी जादुई चालें खेलने से भी मना नहीं कर पाते। एक बार तो पूरा राजमहल नीले रंग में रंगवा दिया गया और बच्चों को लगा कि वे आसमान में पहुँच गए हैं। एक दूसरे मौके पर राजा ने हर जगह शीशे रख दिए यह दिखाने के लिए कि सूर्य सब जगह है ! फिर एक बार जुलूस में प्रवेश के समय मंत्रियों के हैट धुआँ निकालने वाले बनाए गए। हर बार जब भी वह एक बच्चे को देखता अपनी मूँछें मरोड़ता और बड़ी सी मुस्कुराहट देता। खाना, मज़ा, उपहार- हर वह चीज़, जो बच्चे पसंद करते हैं, इस भोज में पेश की जाती।

रात होने पर राजा और रानी बाल दिवस की संध्या पर अपने खूबसूरत घोड़ों पर चढ़ कर धरती पर दौड़ाते हैं। घोड़ों की जीन के बड़े थैले बच्चों के लिए अद्भुत उपहारों से भरे होते हैं। वे बच्चों के सोने का इंतज़ार करते हैं और तब आकर उस भोजन को खाते हैं और विशिष्ट पेय पीते जो बच्चे खास उनके लिए रखते हैं- यह दिखाने के लिए कि वे वहाँ आए थे ! सुबह बच्चों को पता लगता है कि राजा और रानी ने यात्रा की एवज में बहुत कुछ प्रदान किया- वहाँ रंगबिरंगे कागज़ों में उपहार रखे हैं। यह है तिब्बत में शम्भाला समुदाय के लोगों का बाल दिवस।

हर्ष से भरपूर यह परंपरा क्या तुम्हें सान्ता क्लॉज़ और क्रिसमस की याद नहीं दिलाती? विभिन्न देशों में अलग-अलग दिनों को बाल दिवस के तौर पर मनाया जाता है लेकिन इससे एक बात सिद्ध होती है- हरेक दिन बच्चों का एक दिन है !

बाल दिवस की बहुत-बहुत बधाई !

चुटकुला भेजें। एसएमएस करें CJOKE <आपका जोक> 54646 पर

पंडित के मुख से

एक बार एक पंडित सड़क पर जा रहा था। वह अपने आप से बुदबुदा रहा था और अपने पेट पर हाथ फेर रहा था कि अचानक...उसे अपने गले में कुछ अटकता सा महसूस हुआ! उसने ज़ोर से अपशब्द कहे और घबराहट में दोनों हाथों से अपना गला पकड़ लिया। उसने जीभ को बाहर निकालने की कोशिश की लेकिन वह अब भी बुरी तरह अटका हुआ था। पंडित कल्पना भी न कर सका कि यह क्या था! वह खाँसा और थूका और आखिरकार वह ज़ोर से छींका।

कोई चीज़ उसके मुख से निकल कर उसके हाथ में आ गिरी। उसने आश्चर्य से उसे देखा।

''क्या! यह तो एक बगुले का पंख है,'' पंडित हैरान रह गया। उसे इतना आश्चर्य हुआ कि उसे लगा कि वह सुध-बुध खो बैठेगा। एक बगुले का पंख उसके गले में कैसे पहुँच गया? लेकिन ऐसा ही था ...वह अपनी आँखों से देख सकता था!

वह चकित-भ्रमित सा घर गया और चटाई पर बैठ कर गंभीरता से सोचने लगा। उसकी पत्नी भोजन परोसने लगी लेकिन पंडित अपने ख्यालों में खोया हुआ था। उसने पूछने की कोशिश की कि क्या हुआ लेकिन पंडित ने शायद ही कुछ सुना। आखिरकार पत्नी इतनी नाराज़ हुई कि उसने पानी का गिलास दरवाज़े पर दे मारा। पंडित अपनी बुरी यादों से बाहर आया और उसे आश्चर्य से घूरा। ''क्या गड़बड़ है?'' उसने पूछा। जब उसने चिड़चिड़ाते हुए सब कहा तो पंडित ने उसे अपनी सारी कहानी बतायी। उसकी पत्नी ने अपना सिर पीछे झटका और खिलखिलाकर हँस पड़ी।

वह इतनी ज़ोर से हँसी कि आँसू उसके गालों पर लुढ़क पड़े। ''मेरी ज़िंदगी की यह सबसे

अपने सभी दोस्तों को भेजें मुफ़्त SMS hindi.chandamama.com से

मज़ेदार कहानी है!'' वह हर्षातिरेक से चीखी।

''किसी को इस बारे में मत बताना। लोग सोचेंगे कि मैं पगला हो गया हूँ,'' पंडित ने उससे कहा।

उसकी पत्नी ने हँसी को मुश्किल से छिपाते हुए अपना सिर हिलाया। लेकिन वह एक अच्छी औरत थी और अपने वादे पर टिकने वाली थी। अगले दिन उसने अपनी पड़ोसन को बगीचे में पानी देते हुए देखा।

''क्या तुमने ज़िंदगी में कभी इतना अजीबोग़रीब गुलाब देखा है?'' पड़ोसन ने अपनी शेख़ी बघारते हुए कहा। पत्नी ने अपने बगीचे की ओर देखा...वहाँ फूल नहीं थे जिनकी वह शेख़ी बघार पाती। उसने बहुत सोचा और फिर कहा, ''मैंने इससे भी अजीबोगरीब चीज़ें देखी हैं...क्या तुमने कभी इन्सान के मुख से पंख निकलता देखा है? कल ऐसा ही मेरे पति के साथ हुआ!''

पड़ोसन का मुख खुला का खुला रह गया और उसने इसे बहुत ही ध्यान से सुना। बातचीत के बाद वह कल्पना करते हुए अंदर गयी कि पंडित के मुख से बड़ी विशालकाय चिड़ियाँ बाहर निकल कर गिर रही हैं।

उसी शाम पड़ोसन बरामदे में बैठी थी कि उसी रास्ते से धोबी गुज़रा। उसने उसे विनम्रता से नमस्कार किया और पड़ोसन उससे बातचीत करने लगी। धोबी उसे अपनी परेशानियों के बारे में बताने लगा। वह बहुत कर्ज़ में डूबा है। पड़ोसन ने कहा, ''तुम शहर क्यों नहीं चले जाते? मुझे

यकीन है तुम्हें वहाँ ज़्यादा काम मिलेगा!''

धोबी आलसी आदमी था। उसने अपना सिर खुजलाया और कहा, ''मेमसाहब, झाड़ी में दो चिड़ियाँ दिखने से हाथ में एक चिड़िया कहीं अच्छी है। मैं उसके लिए यहाँ का काम नहीं छोड़ना चाहता!''

लेकिन पड़ोसन ने उसके वक्तव्य का पिछला हिस्सा सुना ही नहीं! वह झट से बोली, ''चिड़ियों की बात कर रहे हो, तुम्हें पता है पंडित के अंदर चिड़ियाँ हैं, उसके गले से निकल रही हैं?''

धोबी की आँखें आश्चर्य से फैल गयीं। वह कपड़े भरे गट्ठर धोना आदि सब भूल बरामदे में खुद ही आकर धम्म से बैठ गया और सुनने लगा।

जब तक उनका वादविवाद खत्म हुआ पंडित के गले के नीचे पूरा चिड़ियाघर मौजूद था।

धोबी घर गया, वह यह आश्चर्यजनक समाचार

फ़ारस की एक कहानी पढ़ें hindi.chandamama.com पर

अपने परिवार को बताने के लिए बेताब था। कहानी जंगल की आग की तरह फैली और अगले दिन शाम होते होते पूरा गाँव पंडित और उसके जादुई गले के बारे में जान गया!

यहाँ तक कि सरपंच, जो कि एक बहुत ही उदासीन व्यक्ति था, ने नाश्ते के वक्त अपने बच्चों से कहा, ''तुम जानते हो कभी कभी मैना और चिड़ियाँ तक उसके गले से बाहर निकलती हैं?''

''हमें अपनी परेशानियों का हल निकालने में उसकी सहायता लेनी चाहिए।'' उसकी पत्नी ने सुझाव दिया। सरपंच ने विचारपूर्वक सिर हिलाया। निश्चय ही जो व्यक्ति चिड़ियाँ पैदा कर सकता है, वह साधारण आदमी नहीं होगा!

उसने एक सभा बुलायी और जल्दी ही पंडित की योग्यता द्वारा अपनी समस्याओं को निपटाने की बात से गाँव का हर व्यक्ति राज़ी हो गया।

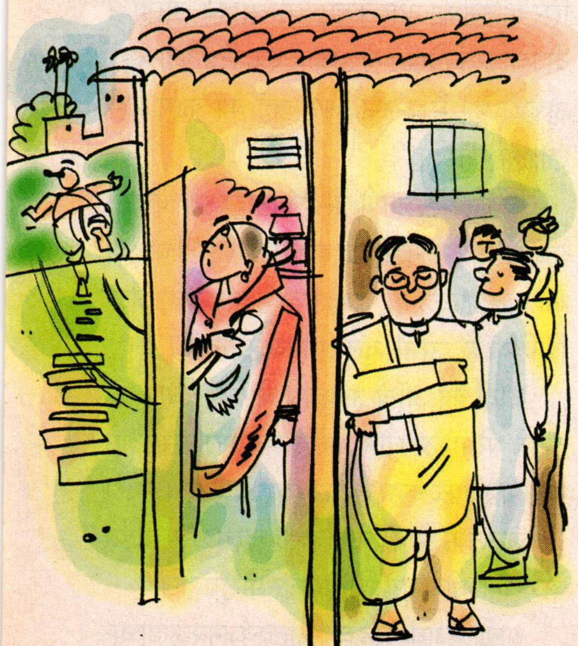

उन्होंने उसके घर जाने और उससे सहायता की विनती करने का निश्चय किया। जब उसके आँगन में एक बड़ी भीड़ ने प्रवेश किया तब पंडित नीम की दातुन कर रहा था।

लोग उसके सामने झुक गए।

''ओह, पवित्रात्मा! चिड़ियों और पंखों वाले जानवरों के स्वामी! हम सब आपकी जादूई शक्तियों के दर्शन करने आए हैं,'' लोगों ने कहा।

पंडित किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गया। ''ये लोग किस बारे में बात कर रहे हैं?'' वह अपने आप से बुदबुदाया।

सरपंच आगे आया और कहा, ''श्रीमान्! हमारे गाँव में कोई भी ऐसा नहीं हुआ जो अपने मुख से चिड़ियाँ निकाल सके। हम सब यह अजूबा देखने के लिए बेताब हैं!''

पंडित को जब अपने मुख मे पख की कहानी के पंख लगने का पता चला तो घबराहट में उसने मुख की लार निगली। लोगों ने उसकी बतायी बात पर विश्वास करने से इनकार कर दिया।

पंडित तूफान की भाँति अपने घर में घुसा और दरवाज़ा बंद कर दिया। लोग उसका इंतज़ार करते रहे और करते रहे लेकिन पंडित कभी बाहर नहीं आया! वह पीछे के दरवाज़े से रेंग कर बाहर निकला और जंगल में भाग गया और वह तब तक वहीं रहा जब तक लोग उसकी अद्‌भुत कहानी भूल नहीं गए। ***- रमा रमेश द्वारा पुनर्कथित***

नई सदस्यता और सदस्यता नवीनीकरण करें hindi.chandamama.com पर

वेताल कथा

तीन सिरोंवाला राक्षस

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; फिर पेड़ से शव को उतारा और कंधे पर डाल लिया। और वह यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''तुम्हारा हठ अडिग है, तुम्हारा चित्त दृढ़ है और तुम्हारी कठोरता मुझे आश्चर्य में डुबो रही है। मुझे यह मालूम नहीं है कि किस शत्रु से प्रतिशोध लेने के लिए इतनी तकलीफें झेल रहे हो। किन्तु संदेह है कि यह आग्रह लक्ष्य की सिद्धि तक ऐसे ही बना रहेगा या बीच में ही पिघल जाएगा? क्योंकि कोई भी यह नहीं बता सकता कि कब, कैसे और क्यों मानव में परिवर्तन होता है। यह जानी हुई बात है कि मानव का चित्त चंचल है। परिस्थितियों के अनुसार उसके विचारों में परिवर्तन होते रहते हैं। कट्टर से कट्टर शत्रु भी क्षण भर में मित्र बन जाते हैं। उस के लिए प्रतिकार हेतु जो-जो प्रयत्न किए जाते हैं वे सभी व्यर्थ हो जाते हैं। तुम्हें

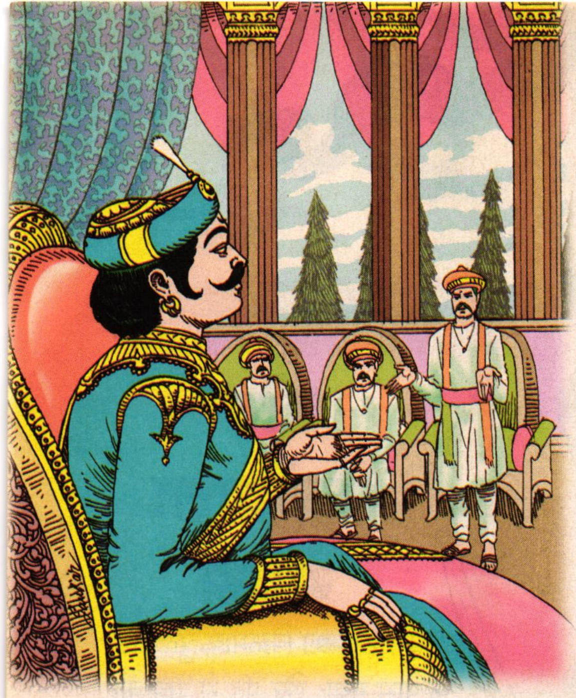

सावधान करने के लिए सूर्यकान्त नामक एक राजा की कहानी सुनाऊँगा, जिसने अकस्मात् ही पद्मसिंह के प्रति अपना मन बदल लिया।''

फिर वेताल उस राजा की कहानी यों सुनाने लगा-

विंध्यगिरि राज्य का राजा पद्मसिंह बहुत ही प्रजापालक था। उसके शासन काल में प्रजा सुखी व प्रसन्न थी। राजा प्रजा के हर कष्ट को दूर करने का प्रयत्न करता था। ऐसे राजा को पाकर प्रजा स्वंय को धन्य मानती थी।

विंध्यगिरि के समीप ही निशारण्य नामक घना जंगल था। उस जंगल में बहुत ही प्रभावशाली जड़ी-बूटियाँ थीं। उन जड़ी-बूटियों के लिए वैद्य अक्सर ही जंगल में जाया करते थे। किन्तु एक दिन तीन सिरों वाला एक भयंकर राक्षस वहाँ आया और वहीं बस गया। आग की तरह फैली इस अफवाह की वजह से वैद्यों ने निशारण्य में जाना छोड़ दिया। ये अफवाहें राजा के कानों तक पहुँचीं। उन्होंने कुछ समर्थ और शक्तिशाली गुप्तचरों को बुलवाया और उन्हें यह पता करने की आज्ञा दी कि यह अफवाह कहाँ तक सच है। जंगल में गए गुप्तचर एक हफ्ते के अंदर लौट आए और उन्होंने महाराज को बताया, ''प्रभु, सच है कि तीन सिरों वाला एक राक्षस निशारण्य में मौजूद है।'' हमने भी उसे देखा है।

इस सच्चाई को जानने के बाद पद्मसिंह सोच में पड़ गया कि कैसे इस राक्षस से छुटकारा पायें। उसने राज्य में मुनादी करवा दी कि राज्य का कोई भी आदमी निशारण्य में न जाए। तभी राज्य में एक विचित्र रोग फैला। बच्चे और बूढ़े इस रोग से अधिकाधिक संख्या में मरने लगे।

पद्मसिंह ने दरबार के वैद्यों को बुलाकर उन्हें आदेश दिया कि वे इस रोग का निदान व रोकथाम के उपाय खोजें। वैद्य-ग्रंथों को पढ़ने के बाद वैद्यों ने कहा, ''राजन, इस रोग का निर्मूलन करने वाली औषधियों के बारे में हमें जानकारी प्राप्त हो चुकी है किन्तु इसके लिए आवश्यक नवसंजीवनी जड़ी-बूटियाँ निशारण्य में ही उपलब्ध हो पाएँगी। चूँकि वहाँ तीन सिरों वाला राक्षस रहता है इसलिए वहाँ कोई भी नहीं जा सकता।''

उनकी बातों में छिपी सच्चाई को पद्मसिंह ने मान लिया और मौन रह गया। पर दिन ब दिन मरने वालों की संख्या बढ़ती गई। यह सब देख कर राजा बहुत ही चिंतित हो उठा। उसने बहुत

नए संग्रह अच्छे हैं? ARCHIVES <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर SMS करें

सोचा-विचारा और अंततः यह निश्चित किया कि प्राणों की परवाह किए बिना वह स्वयं जंगल जाकर नवसंजीवनी जड़ी-बूटियों को लाएगा। उसने यह भी निर्णय लिया कि मैं अकेले ही जंगल जाऊँगा। अगर यह रहस्य खुल गया तो महारानी, वैद्य और प्रजा उसे जाने नहीं देंगे। अतः बिना बताए ही जाना होगा। उसने जाने से पहले दरबार के वैद्यों को बुलाकर उनसे नवसंजीवनी जड़ी-बूटी की जानकारी प्राप्त की कि वह दिखने में कैसी होती है और जंगल में कहाँ-कहाँ मिलती है।

एक दिन आधी रात को पद्मसिंह अकेले ही अंतःपुर से निकल पड़ा और दूसरे दिन निशारण्य पहुँचा। निशारण्य में प्रवेश करने के बाद वह उन जड़ी-बूटियों को पाने के लिए एक स्थान पर पहुँचा। उसने वहाँ देखा कि बरगद के पेड़ के नीचे तीन सिर वाला राक्षस आँखें बंद करके तपस्या में लीन है। उसे लगा कि उस तीन सिरोंवाले तपस्वी राक्षस से उसे कोई हानि नहीं पहुँचेगी। उसे देखकर वह अत्यंत आश्चर्यचकित हो गया। वह सोचने लगा कि तपस्या और राक्षस - यह तो बेजोड़ मेल है। यह राक्षस अवश्य ही महान आत्मा है जो किसी शाप का दण्ड भोग रहा है। मेरी प्रजा का डर निराधार हो सकता है। परंतु बिना बात किए किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा जा सकता। यह विचार कर राजा घोड़े से उतरा।

पद्मसिंह ने पास ही के पेड़ से घोड़ा बाँध दिया और उस राक्षस की तपस्या भंग न करते हुए उसके सामने बैठ गया। कुछ क्षणों के बाद राक्षस

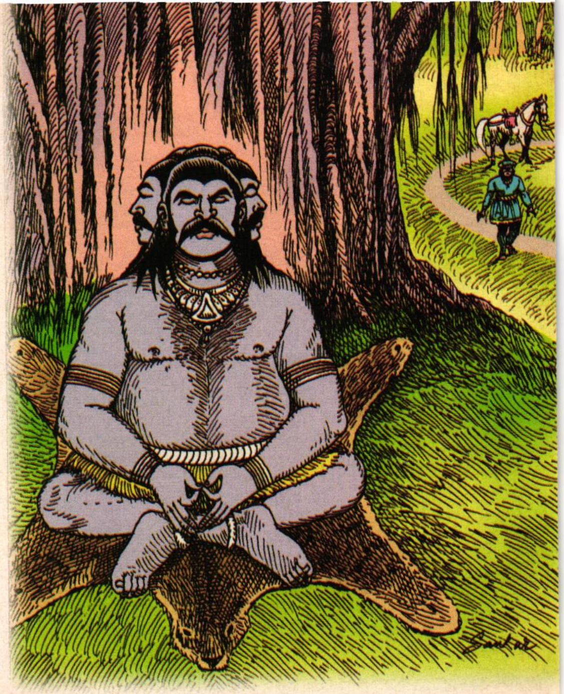

ने आँखें खोलीं और पद्मसिंह को देखकर कहा, ''एक लंबे अरसे के बाद एक मनुष्य को देख रहा हूँ। तुम कौन हो और यहाँ क्यों आए हो?''

पद्मसिंह ने सविनय नमस्कार करते हुए उत्तर दिया, ''राक्षसोत्तम, मेरा नाम पद्मसिंह है तथा मैं विंध्यगिरि राज्य का राजा हूँ। मेरे राज्य में एक विचित्र रोग फैला हुआ है, जिसके कारण अनगिनत लोग मर रहे हैं। इस मृत्यु के ताण्डव को रोकने के लिए आवश्यक जड़ी-बूटियाँ इस जंगल की गोद में संजीवन पर्वत पर उपलब्ध होती हैं, उन्हीं के लिए मैं यहाँ आया हूँ।''

''तुम राजा होते हुए भी स्वयं यहाँ क्यों चले आए? इस साधारण कार्य के लिए वैद्य और सिपाहियों को भी भेज सकते थे।'' राक्षस ने आश्चर्य से पूछा।

वेताल की और कहानियाँ पढ़िये hindi.chandamama.com के संग्रहों में

"आप जब से इस जंगल में विराजमान हैं तब से आपसे डरने के कारण यहाँ आने का कोई भी साहस नहीं कर पाता है। इसलिए मुझे स्वयं आना पड़ा।" राजा ने अत्यंत विनम्रता से उत्तर दिया।

"तो क्या तुम्हें अपनी जान की परवाह नहीं है?" राक्षस ने उत्सुकता से पूछा।

"राजा होने के नाते प्रजा की देखरेख मेरा प्रथम कर्तव्य है। प्रजा के हित के लिए मैं प्राण भी निछावर करने के लिए तत्पर हूँ।" राजा ने दृढ़ता से कहा।

राक्षस ने प्रशंसा भरे नेत्रों से राजा को देखा। इतने में घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनाई दी। राक्षस एवं राजा उसी ओर देखने लगे, यह जानने के लिए वे उत्सुक थे कि कौन यहाँ बेधड़क आने का साहस कर रहा है।

कुछ ही क्षणों में एक अश्वारूढ़ व्यक्ति वहाँ आया। पद्मसिंह ने सूर्यकान्त को तुरंत ही पहचान लिया, जो पड़ोसी देश राजगढ़ का राजा था।

विंध्यगिरि और राजगढ़ राज्यों के मध्य तीन पीढ़ियों से शत्रुता चली आ रही है। धर्मनिष्ठ पद्म-सिंह जैसे ही सिंहासन पर आसीन हुआ, उसने सूर्यकान्त की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया लेकिन सूर्यकान्त ने उसे अपना कट्टर शत्रु मानकर उसकी दोस्ती ठुकरा दी। वह इस मौके की ताक़ में था कि कब विंध्यगिरि को अपने राज्य का भाग बना ले। नहीं तो कम से कम उससे प्रतिकार लेने की योजना बना रहा था।

राक्षस के पास बैठे पद्मसिंह को सूर्यकान्त ने भी पहचान लिया। उसकी परवाह किए बिना उसने राक्षस से कहा कि, "मैं तुमसे मिलने आया हूँ।"

"बताओ, किस काम से आए हो?" राक्षस ने अनमने भाव से पूछा।

"तुमसे एकान्त में बात करना चाहता हूँ।" सूर्यकान्त ने कहा।

तब राक्षस ने पद्मसिंह से कहा, "राजन्, आप जाइए और जड़ी-बूटियों को चुनकर ले आइए।"

राजा जंगल में संजीवन पर्वत की ओर चला गया। तब सूर्यकान्त ने राक्षस से कहा, "मित्र, पद्मसिंह मेरा कट्टर शत्रु है। अब उसके राज्य में एक विचित्र रोग फैल गया है और कितने ही लोग मर रहे हैं। इन आकस्मिक मौतों को रोकने के लिए वह नव संजीवनी जड़ी-बूटियाँ ले जाने जंगल

चन्दामामा की रामायण खरीदें hindi.chandamama.com पर

आया है और इसीलिए मैं तुम्हें यह कहने आया हूँ कि वह जड़ी-बूटियाँ ले जाने न पाए।''

''इससे तुम्हें क्या लाभ पहुँचेगा?'' राक्षस ने आश्चर्य से पूछा।

''संजीवनी जड़ी-बूटियाँ अगर उसे प्राप्त न हों तो विंध्यगिरि राज्य क्रमशः श्मशान बन जाएगा और मेरा क्रोध शान्त हो जाएगा।'' सूर्यकान्त ने आवेश भरे स्वर में कहा।

''तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा तो मुझे क्या दोगे?'' राक्षस ने पूछा।

''तुम जो भी चाहो, दूँगा, चाहे वह कुछ भी हो।'' सूर्यकान्त ने उत्साह भरे स्वर में कहा।

''मेरी भूख मिटाने के लिए अपने राज्य से हर दिन एक आदमी को भेजना होगा।'' राक्षस ने कहा।

''अवश्य।'' बिना सोचे-विचारे सूर्यकान्त ने कहा।

इतने में पद्मसिंह संजीवनी जड़ी-बूटियों को लेकर वहाँ आ पहुँचा। तीन सिरों वाले राक्षस ने सूर्यकान्त की ओर क्रोध भरी आँखों से देखते हुए कहा, ''तुम जैसा मूर्ख मैंने नहीं देखा। पद्मसिंह के पैर छूकर नमस्कार करो और तुरंत यहाँ से चले जाओ।'' हुँकार भरते हुए राक्षस ने कहा।

क्षणभर तक सोचने के बाद पद्मसिंह के पैरों को छूकर नमस्कार करके सूर्यकान्त चुपचाप वहाँ से चला गया।

पद्मसिंह ने राक्षस को प्रणाम करते हुए कहा, ''राक्षसोत्तम, आपसे एक सहायता पाने आपके पास आया था। पर आपने दो सहायता कीं। जन्मभर मैं आपका कृतज्ञ रहूँगा।''

विक्रम बेताल की पहली कहानी पढ़िये hindi.chandamama.com पर

''तुम्हारी धर्मनिष्ठा पूजनीय है। अब मैं निशारण्य छोड़कर किसी और जंगल में चला जाऊँगा।'' कहता हुआ राक्षस वहाँ से हमेशा के लिए चला गया। पद्मसिंह नवसंजीवनी जड़ी-बूटियों के साथ राज्य पहुँचा।

वेताल ने यह कहानी सुना चुकने के बाद अपने संदेहों को व्यक्त करते हुए राजा विक्रमार्क से पूछा, ''राजन्, राक्षस द्वारा माँगे गए नर माँस को भी भेजने के लिए तैयार सूर्यकान्त को तीन सिर वाले राक्षस ने मूर्ख क्यों कहा और उसकी निंदा क्यों की? तब तक पद्मसिंह को अपना कट्टर शत्रु मानने वाले सूर्यकान्त ने उसके पैर छूकर उसे नमस्कार क्यों किया। क्या राक्षस से भयभीत होकर ऐसा किया? नवसंजीवनी जड़ी-बूटियों को इकट्ठा करके ले जाने की अनुमति देकर राक्षस ने यह एक ही सहायता की तब पद्मसिंह ने जिस दूसरी सहायता का जिक्र किया, वह क्या है? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रहोगे तो तुम्हारा सिर फट जाएगा।''

विक्रमार्क ने कहा, ''जहाँ पद्मसिंह प्रजा के प्राणों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तत्पर था वहीं सूर्यकान्त तीन पीढ़ियों से चली आ रही शत्रुता का बदला लेने के लिए अपने राज्य की प्रजा के भी प्राणों की बलि देने को तैयार हो गया। इसलिए राक्षस ने सूर्यकान्त को मूर्ख कह कर उसकी निंदा की। राक्षस की इस निंदा से सूर्यकान्त सोच में पड़ गया और सच्चाई को जानकर पद्मसिंह से क्षमा माँगी। राक्षस से डर कर उसने ऐसा नहीं किया। उसने अपनी गलती महसूस की, अपनी भूल पर उसे पश्चाताप हुआ। अतः भविष्य में दोनों राज्यों के बीच बैर नहीं होगा, साथ ही स्नेह भी स्थापित होगा। यही राक्षस की दूसरी सहायता है। अब रही तपस्या में लीन तीन सिर वाले राक्षस द्वारा नरमाँस माँगने की बात। यह केवल सूर्यकान्त की परीक्षा हेतु माँगा गया था। विंध्यगिरि की प्रजा उसके वहाँ रहने से भयभीत है, इसलिए वह वहाँ से चला गया।''

राजा के मौन भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार शिव नागेश्वर की रचना)

चन्दामामा के वीरों के बारे में जानें hindi.chandamama.com पर

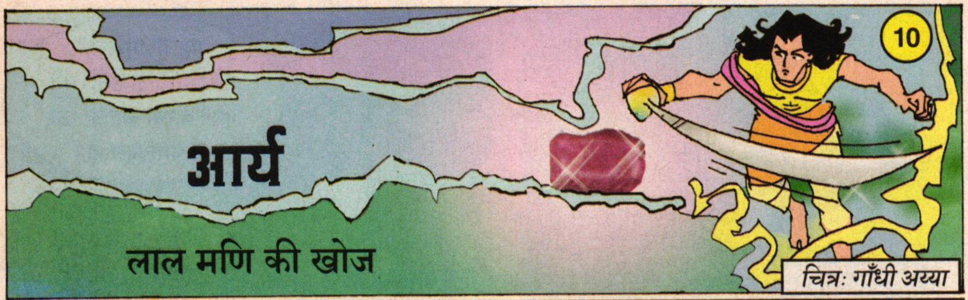

आर्य घोड़े पर पूर्वा की ओर जाता है। उसे चेतावनी देने वाले बुरे सपने आते हैं, अचानक उसके समक्ष एक बच्चा प्रकट होता है। आर्य उससे पूछता है कि क्या वह एक खोया हुआ बच्चा है।

कौन राजा? हमारे माता-पिता हमें खोज रहे होंगे... चलो हम चलते हैं!
यह राजाओं की संहिता है कि उन्हें तभी कार्य करना चाहिए जब आपातकाल हो।
लेकिन...
...हम क्यों तकलीफ उठाएँ?
तुम कष्ट नहीं उठाओगे। मैंने कष्ट जो तुम्हें दिया है, उसके बदले इस अग्नि-परीक्षा के समाप्त होने पर तुममें से हरेक को एक अद्‌भुत शक्ति प्राप्त होगी।
क्या मैं लोगों को देख पाऊँगा?
केवल उन्हें ही नहीं बल्कि उनके मन को भी देख सकोगे।
और यह अग्नि-परीक्षा? कब समाप्त होगी?

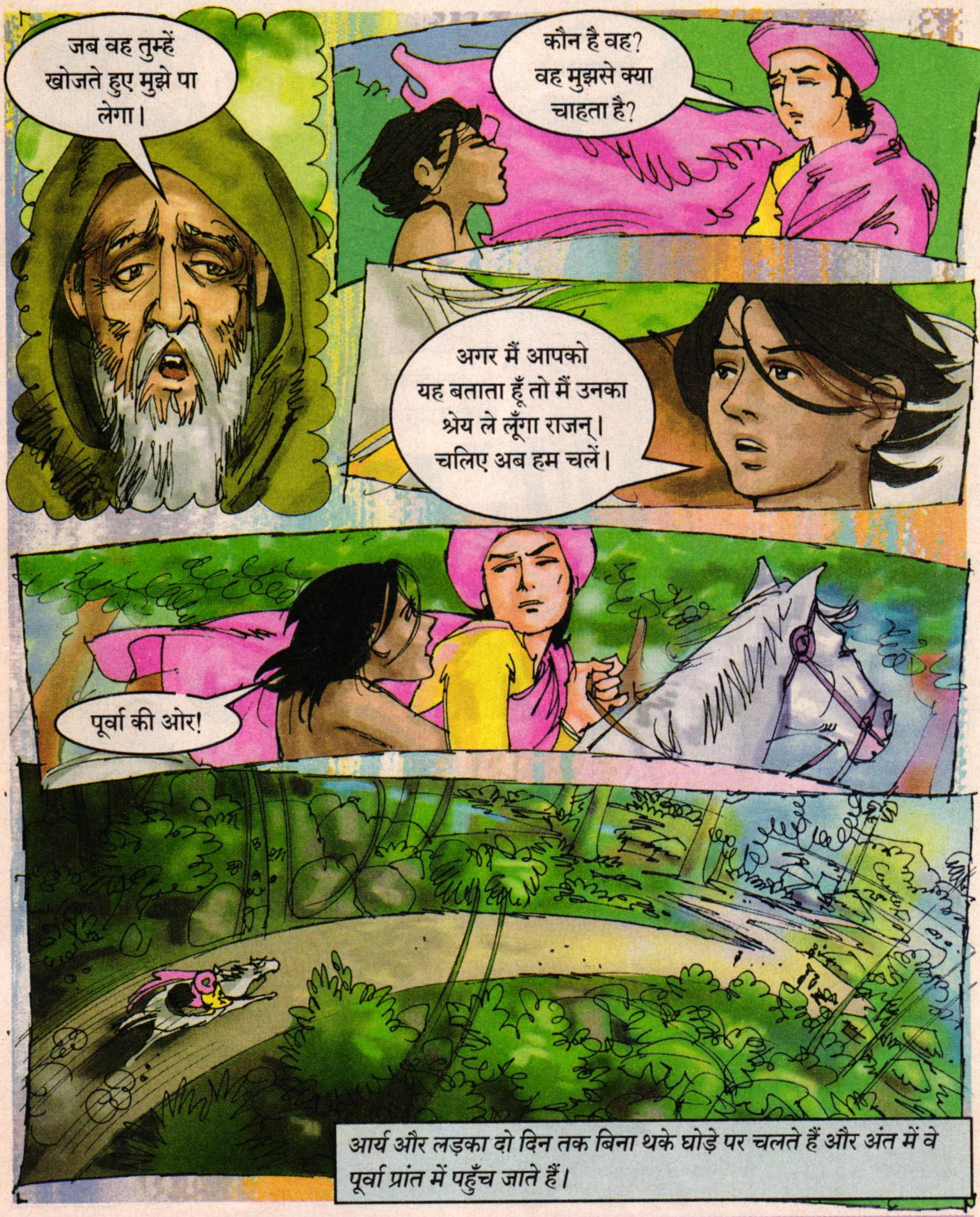
जब वह तुम्हें खोजते हुए मुझे पा लेगा।
कौन है वह? वह मुझसे क्या चाहता है?
अगर मैं आपको यह बताता हूँ तो मैं उनका श्रेय ले लूँगा राजन्। चलिए अब हम चलें।
पूर्वा की ओर!
आर्य और लड़का दो दिन तक बिना थके घोड़े पर चलते हैं और अंत में वे पूर्वा प्रांत में पहुँच जाते हैं।

धर्म पिता यहाँ से थोड़ी ही दूरी पर हैं, राजन्। शायद हमें पैदल जाना चाहिए?
और कितनाआगे?
अब केवल थोड़ी ही दूर और।
वहाँ... वहीं वे रहते हैं।
वे हड्डियाँ...
आपने बहुत सी परी कथाएँ पढ़ी हैं, राजन्। पर वे एक राक्षस नहीं हैं।
तुम आ गए जैसा कि मैं जानता था कि तुम आओगे।
और है

युद्ध काण्ड-११

राम तो अत्यंत दुःख में थे ही, इसी बीच विभीषण ने उनसे एक बात और बतायी- ब्रह्मा ने इन्द्रजित को बताया था, ''निकुम्भ चैत्य में जब तुम होम कर रहे हो, तब उस समय अगर किसी ने तुम से युद्ध किया तो तुम अवश्य ही मारे जाओगे।'' इस प्रकार अब हमें होम भंग करने का अवसर मिला है।

राम ने जैसे ही आज्ञा दिया तुरन्त लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान, विभीषण वानर सेना को साथ लेकर, इन्द्रजित का होम भंग करके, उसको मारने निकल पड़े।

उनके रास्ते को रोके राक्षस सेना खड़ी थी। विभीषण ने लक्ष्मण से कहा कि होम पूरा होने से पहले इस सेना का नाश करना होगा। यदि यह सेना नष्ट कर दी गई तो होम समाप्त होने से पहले ही मेघनाद बाहर आ जाएगा। तब उसे आसानी से मार सकते हैं।

यह सुन कर वानर सेना ने राक्षस सेना पर आक्रमण किया। दोनों बड़े ज़ोर-शोर से लड़े। वानर और राक्षस बड़ी संख्या में मारे गए। पर राक्षस वानरों के सामने घबरा गए। यह ख़बर सुनते ही इन्द्रजित होम पूरा किए बगैर ही चला आया और रथ पर सवार हो गया। राक्षस सेना ने उसके रथ को घेर लिया।

परंतु हनुमान पर्वत के आकार के बड़े-बड़े वृक्षों से राक्षसों को मारने लगे। हज़ारों राक्षसों ने हनुमान को चारों ओर से घेर लिया। राक्षस उस पर कई तरह के हथियारों से हमला कर रहे थे, पर हनुमान ने बिना किसी की सहायता को सब का अकेले ही मुकाबला किया।

राम जन्म के बारे में पढ़िये 'राम अवतार' में hindi.chandamama.com पर

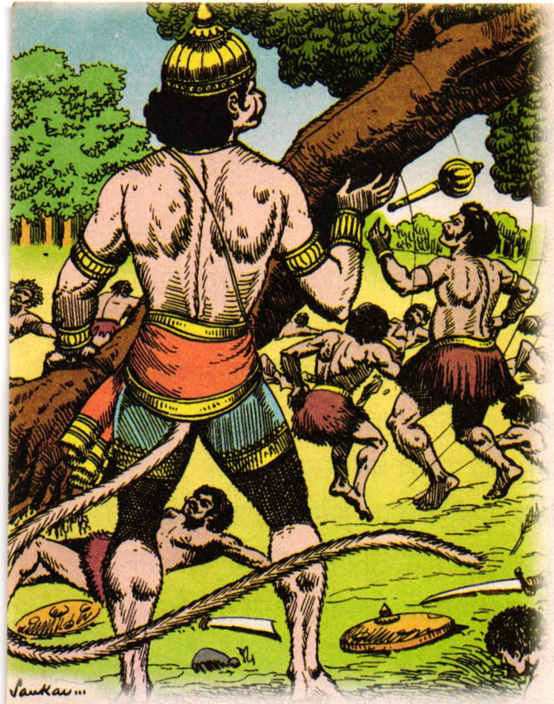

राक्षसों को हनुमान द्वारा सताते देख, इन्द्रजित ने अपना रथ उसकी ओर मोड़ा। मेघनाद के बाणों से हनुमान बुरी तरह घायल हो गए। हनुमान चिल्लाए - ''दुष्ट कहीं का, यदि तू सचमुच वीर है, तो बिना हथियारों के खाली हाथों से मुझ से युद्ध कर।'' यह सुनकर इन्द्रजित ने उच्चस्वर में अट्टहास किया और दूने वेग से बाणों की वर्षा प्रारंभ कर दी। हनुमान जो भी वृक्ष या शिला उस पर फेंकते वह पल भर में उसे टुकड़े-टुकड़े कर देता।

इन्द्रजित और हनुमान का युद्ध देखकर वानर घबरा गये और विभीषण के पास गए। उन्होंने ध्यान से सब हाल सुना।

''इन्द्रजित बाणों से हनुमान को मार सकता है। तुम जाकर इन्द्रजित से मुकाबला करो और युद्ध करके उसे मार दो।'' विभीषण ने लक्ष्मण से कहा।

तुरंत विभीषण और लक्ष्मण निकुम्भ की ओर गए। यहीं इन्द्रजित भूतों को बलि देकर, युद्ध के लिए निकलता था।

''लक्ष्मण, इन्द्रजित के उस पेड़ में प्रवेश करने से पहले ही उसके रथ और सारथी को मार दो।'' विभीषण ने कहा।

लक्ष्मण तुरंत पेड़ के पास जाकर खड़ा हो गया। उसने इन्द्रजित को युद्ध के लिए ललकारा। मेघनाद ने इस पर लक्ष्मण से तो कुछ नहीं कहा पर विभीषण की ओर मुड़ कर कहा, ''विभीषण, तुम में कुल का गर्व नहीं है। तुम इस भूमि में जन्म लेकर मेरे साथ ही विश्वासघात कर रहे हो? न तुम में बन्धु प्रेम है, न धर्म, न ममता? स्वजनों को छोड़ कर, शत्रुओं के सेवक हो गए हो? स्वजनों में गौरव के साथ रहने की अपेक्षा, शत्रुओं में नीचों की तरह रहना तुम्हें स्वीकार है? तुम्हारी अक्ल मारी गई है। इसीलिए मेरे होम में विघ्न डालने हेतु तुम लक्ष्मण को इस पेड़ के पास लाए हो। इस तरह का काम कोई और नहीं करेगा।''

यह सुन विभीषण ने कहा, ''बिना मेरी बात जाने यूँ बातें कर रहे हो? मैं पैदा तो राक्षस कुल में हुआ हूँ, पर मेरा स्वभाव राक्षसों का नहीं है। इसीलिए ही अपने भाई को छोड़ कर आया हूँ। सज्जन भी दुर्जनों की कुसंगति में दुर्जन हो जाता है। दुष्ट सर्पों को दूर रखना चाहिए। परधन और परस्त्री की कामना, मित्रों पर अविश्वास नाश के

इन्द्र ने करम्भ का वध कैसे किया पढ़ें hindi.chandamama.com पर

कारण हैं। इन सब के कारण ही तुम और तुम्हारे पिता दोनों मृत्यु को प्राप्त होने वाले हैं। सीता की पुतली बनाकर, उसको मारकर तुमने राम और लक्ष्मण का अपमान किया है। तुम जीने लायक नहीं हो। लक्ष्मण के हाथ मर कर नरक जाओ।''

इन्द्रजित ने बड़े गुस्से में हथियार लेकर, रथ पर सवार होकर, हनुमान के कंधे पर सवार लक्ष्मण से कहा, ''रात को तुम्हें और तुम्हारे भाई को मैंने ही अपने बाणों से मूर्छित कर दिया था। वह या तो तुम भूल गए हो, नहीं तो तुम्हारी मौत शीघ्र ही आनेवाला है। अभी भी समय है, पीछे हट जाओ।''

इसपर लक्ष्मण ने कहा, ''अरे राक्षस, तुम बातों से ही हमें मार रहे हो, तुम सचमुच हमें नहीं मार सकते। जो काम करते हैं वे डींग नहीं हाँकते। तुम चोर की तरह हमें बिना दिखाई दिए, हमसे लड़े। वीर ऐसा नहीं करते। आओ, सामने आओ, अपना पराक्रम दिखाओ। अब अपना बकवास बन्द करो।''

तुरंत इन्द्रजित ने बहुत ही वेग से लक्ष्मण पर बाण वर्षा शुरू कर दी। उसने सिंहनाद किया। लक्ष्मण ने भी इन्द्रजित पर तेज़ बाण छोड़े। कई अस्त्रों का प्रयोग किया। दोनों घमासान युद्ध करने लगे।

इसी बीच विभीषण ने लक्ष्मण से कहा, ''इन्द्रजित का धैर्य छूटता मालूम होता है। उसके मुँह पर उदासी प्रतीत हो रही है। जैसे भी हो जल्दी से इसे मारे दो।'' सचमुच लक्ष्मण के बाण की चोट से, एक क्षण के लिए इन्द्रजित बेहोश हो गया, पर फिर जल्दी ही संभल गया। उसने दूने जोश से लड़ना प्रारंभ किया। दोनों ही बड़े पराक्रम से लड़ रहे थे। दोनों ने एक दूसरे को बुरी तरह घायल कर दिया।

उनको युद्ध करता देख, विभीषण ने भी युद्ध करना चाहा, वह अपने मंत्रियों के साथ राक्षसों का संहार करने लगा। वह वानरों से कहने लगा, ''अब रावण के वीरों में केवल इन्द्रजित ही बाकी रह गया है और सब को तुमने मार डाला है। यह मेरे भाई का बेटा है, इसलिए इसको मैं अपने हाथों से नहीं मार सकता हूँ। वह कार्य लक्ष्मण करेगा। इन्द्रजित की जो राक्षस सहायता कर रहे हैं, तुम उनको मार कर, इन्द्रजित को मारने में लक्ष्मण की मदद करो।'' वानर वीर पूँछ हिलाते, सिंहनाद

चन्दामामा के वीरों के बारे में जानें hindi.chandamama.com पर

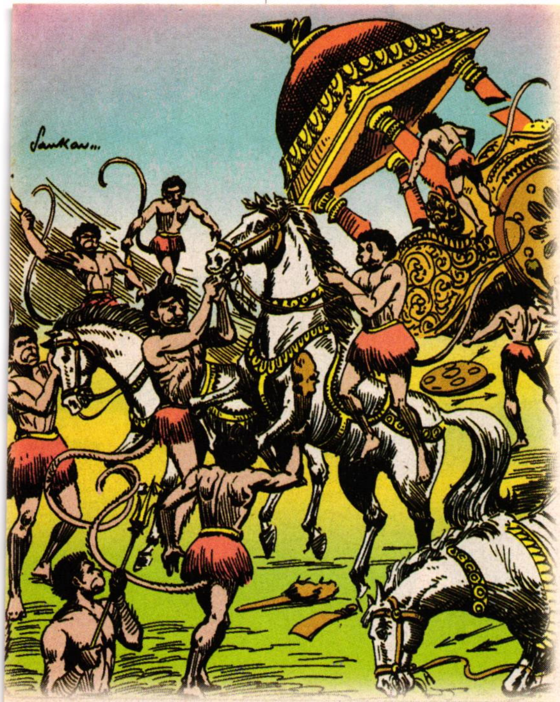

और रथ में युद्ध भूमि में आया और लक्ष्मण और विभीषण का मुकाबला करने लगा। इन्द्रजित को एक और रथ में आया हुआ देखकर उन दोनों ने उसकी सूझबूझ की सराहना की।

इन्द्रजित और लक्ष्मण में फिर से युद्ध शुरू हुआ और लक्ष्मण ने दुबारा इन्द्रजित के सारथी को मार डाला। पर रथ के घोड़े बिना सारथी के ऐसे चल रहे थे, जैसे उनको चलना चाहिए था। इन्द्रजित, लक्ष्मण के अतिरिक्त विभीषण पर भी बाण वर्षा करने लगा। विभीषण क्रुद्ध हो उठा और उसने अपनी गदा से इन्द्रजित के रथ के घोड़ों को मार दिया।

इन्द्रजित ज़मीन पर कूदा और उसने एक शक्ति लेकर विभीषण पर फेंकी। लक्ष्मण ने अपने बाणों से उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। फिर इन्द्रजित और लक्ष्मण एक दूसरे पर दिव्यास्त्रों का प्रयोग करने लगे। जब वे एक दूसरे से टकराने लगे तो आग और धुँआ निकलने लगा।

दोनों जिस प्रकार युद्ध कर रहे थे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह युद्ध अनंत काल तक चलता रहेगा। दोनों का ही युद्ध कौशल एंव बल अनिर्वचनीय था। परंतु इंद्रजित मायाजाल में भी पारंगत था, अतः अजेय था। ऐसे में लक्ष्मण को विभीषण का साथ मिलने से इन्द्रजित हतोत्साहित हो गया और मौका मिलते ही लक्ष्मण ने अचूक ब्रह्मास्त्र का प्रयोग इन्द्रजित को मार डाला। मरते-मरते इन्द्रजित ने माया के प्रभाव से स्वयं को गायब कर दिया।

करते, जोश में राक्षसों से लड़ने लगे।

इस बीच लक्ष्मण ने इन्द्रजित के सारथी को मार दिया। इन्द्रजित अपने रथ को स्वयं चलाता, युद्ध करने लगा। उस समय चार वानर वीरों ने इन्द्रजित के रथ के घोड़ों पर हमला करके, उनको मार दिया। उसके रथ को तोड़-फोड़ दिया। इन्द्रजित ज़मीन पर उतर कर लक्ष्मण से युद्ध करने लगा।

उसने अपने राक्षसों से कहा, ''मैं चुपचाप नगर में जाकर, एक और रथ पर सवार होकर आऊँगा। तुम मेरे सामने खड़े होकर वानरों से युद्ध करते जाओ। यह देखो कि वानर मेरे रास्ते में न आयें।''

वह राक्षसों के पीछे-पीछे बिना वानरों को दिखाई दिए लंका नगरी में चला गया। वह एक

चन्दामामा की रामायण खरीदें hindi.chandamama.com पर

लक्ष्मण निराश हो गए कि उनका अचूक ब्रह्मास्त्र भी मायावी का कुछ न बिगाड़ सका। तब विभीषण ने उन्हें सच बताया कि वह मारा जा चुका है। विभीषण और वानरों ने सिंहनाद किया और राक्षस तितर-बितर होकर भाग गए।

इन्द्रजित के मारे जाने पर वानरों को अत्यंत आनन्द हुआ। तत्पश्चात् लक्ष्मण विभीषण और हनुमान के साथ राम के पास आ पहुँचे। लक्ष्मण के यह कहते ही कि इन्द्रजित मर गया है, श्री राम ने लक्ष्मण को गले लगा लिया। ''अब रावण को मरा समझो। तुमने यह बहुत अच्छा कार्य किया है, लक्ष्मण।''

चिकित्सा में निपुण सुषेण ने आकर लक्ष्मण और विभीषण को लगे बाण निकाल कर उनकी चिकित्सा की।

इन्द्र को पराजित करने वाला इन्द्रजित लक्ष्मण नामक एक साधारण मानव के हाथों मारा गया, यह जान कर रावण मूर्छित हो गया।

होश में आने पर वह इन्द्रजित के लिए काफी देर तक दुख से रोता रहा। फिर उसने क्रोध से कहा, ''जो सीता, हमेशा राम का ध्यान करती रहती है उसको जीवित रखने का क्या फायदा? अभी उसे मारे देता हूँ।'' वह तलवार लेकर सीता के पास गया। उसके मंत्री और पत्नियाँ उसके साथ जाने लगीं। मंत्रियों ने उसे रोकना चाहा पर रावण ने उनकी एक न सुनी।

सीता ने जब रावण को दूर से देखा तो सोचा कि उनकी मृत्यु समीप आ गई है। उसी दिन हनुमान के कंधों पर सवार होकर राम के पास न जाने के कारण वह पछताने लगीं और मन ही मन

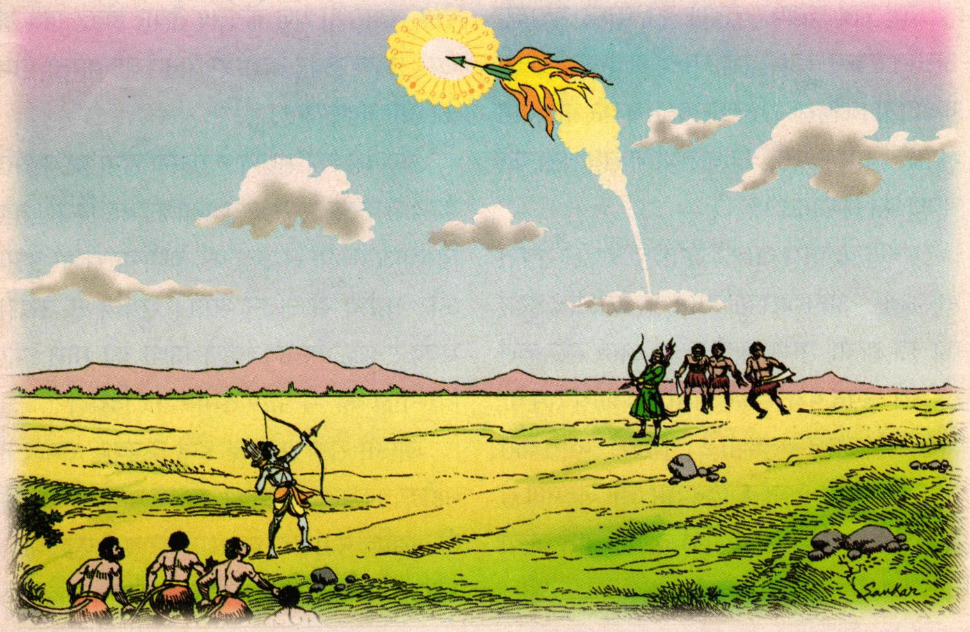

मगर का सामना करके क्या गजेन्द्र बचा? देखें hindi.chandamama.com

उसने अपने सेनापतियों से कहा, ''आज तुम सब जाकर युद्ध करो। भले ही तुम उसे मार न सको, पर तुम से लड़ कर वह इतना थक जाएगा कि कल आसानी से मारा जा सकेगा।''

रावण की बात को सुनकर सारे राक्षस युद्ध के लिए चल दिए। युद्ध भूमि में वे वानरों को बुरी तरह मारने लगे, तब श्री राम ने उनसे युद्ध करके उनमें से लाखों को मार गिराया। लंका नगर में हाहाकार मच गया। राक्षस स्त्रियाँ उच्चस्वर में विलाप करने लगीं।

कहने लगीं, ''काश! मृत्यु के समय ही सही, एक बार स्वामी के दर्शन हो जाते तो मैं धन्य हो जाती।''

यह सब देखकर रावण की पत्नी मंदोदरी अत्यंत खिन्न हुई। पुत्र की मृत्यु से दुखी मंदोदरी ने अपनी विश्वस्त सेविका को भेज कर बुद्धिमान सुपार्श्व नामक मंत्री को बुलाया व सब बता कर रावण को समझाने भेजा।

रावण के पास जाकर सुपार्श्व ने उसे रोकते हुए कहा, ''आप जैसे बुद्धिमान एवं बलनिधि पुरुष को स्त्री हत्या शोभा नहीं देती। अगर बस चले तो उसे अपने वश में करो तथा यह क्रोध राम पर दिखाओ। आज चतुर्दशी है। युद्ध की तैयारी करो और कल अमावस्या के दिन राम और लक्ष्मण से युद्ध करो।'' रावण को सुपार्श्व की बातें जँची और वह वापस चला गया।

तब रावण स्वयं राम और लक्ष्मण को मारने निकल पड़ा। उसके साथ रथों में महापार्श्व, महोदर, विरूपाक्ष आदि योद्धा भी निकले। सब मिलकर उत्तरी द्वार के पास गए जहाँ राम और लक्ष्मण थे। राक्षस सेना को युद्ध के लिए सन्नद्ध होकर आता देख, वानर भी युद्ध के लिए तैयार होकर खड़े हो गए। रावण अपने बाणों से वानरों को मारता, राम की ओर बढ़ने लगा।

यह देख कर सुग्रीव ने राक्षस सेना पर पत्थरों की वर्षा करके असंख्य राक्षसों को मार दिया। तब विरूपाक्ष रथ पर से उतर कर हाथी पर सवार हुआ और सुग्रीव से लड़ने लगा। सुग्रीव ने उससे भयंकर युद्ध किया। पहले हाथी को मारा फिर विरूपाक्ष का भी काम तमाम कर दिया।

अपनी सेना को नष्ट होते देखकर, रावण ने महोदर को वानर सेना का खात्मा करने की आज्ञा दी। सुग्रीव ने महोदर से काफी देर तक युद्ध किया और उसे मार डाला। वानरों ने सिंहनाद किया।

विष्णु पुराण की कथाएँ पढ़ें hindi.chandamama.com पर

बधाइयाँ ! चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी सितम्ब २००९ के उत्तर : C
विजेता : सि. दुर्गा, पश्चिम सिंगभूम

चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी

इन्द्रेजित को किसने मारा?

a. लक्ष्मण b. हनुमान c. विभीषण

आप अपना उत्तर CRQ <a/b/c> <space> <Name, Lang, Address> लिखकर 54646 पर SMS कर दो। बेतरतीब तरीके से चुने गए भाग्यशाली को चन्दामामा का 'कॉमिक काम्बो पैक' पुरस्कार में दिया जाएगा।

इस बीच महापार्श्व अंगद की सेना के पास गया। अंगद से उसने द्वन्द्व युद्ध किया और कुछ देर बाद वह अंगद के हाथों मार गया।

अपने साथ आए हुए तीनों मंत्रियों को मरा देख कर बड़े गुस्से में रावण श्री राम की ओर गया और उनसे युद्ध करने लगा। दोनों ने एक दूसरे पर महास्त्रों का उपयोग किया। एक दूसरे के अस्त्रों को नष्ट कर दिया। आखिर, एक दूसरे के मर्म स्थलों पर बाण छोड़े।

राम जब रावण को बुरी तरह घायल करके विश्राम ले रहे थे तब लक्ष्मण ने रावण की ध्वज उड़ा दी। विभीषण ने गदा लेकर रावण के रथ के अश्वों को मार दिया। रावण ने रथ से उतर कर, अपने भाई विभीषण पर एक शक्ति का उपयोग किया। लक्ष्मण ने इस शक्ति को बीच में ही अपने बाणों से काट दिया।

रावण ने एक और बड़ी शक्ति लेकर उसे घुमा कर विभीषण पर छोड़ना चाहा। लक्ष्मण ने फिर रावण पर इस प्रकार बाण छोड़े कि वह शक्ति फेंकने न दी। आखिर रावण ने गुस्से में लक्ष्मण पर ही शक्ति छोड़ी। वह लक्ष्मण की छाती के अंदर घुस गई। लक्ष्मण गिर गया।

श्री राम को यह देख कर बहुत क्रोध आया। उन्होंने गुस्से में रावण पर बहुत ही तीव्र गति से तीक्ष्ण बाण छोड़े। रावण, राम का मुकाबला न कर सका और भाग गया।

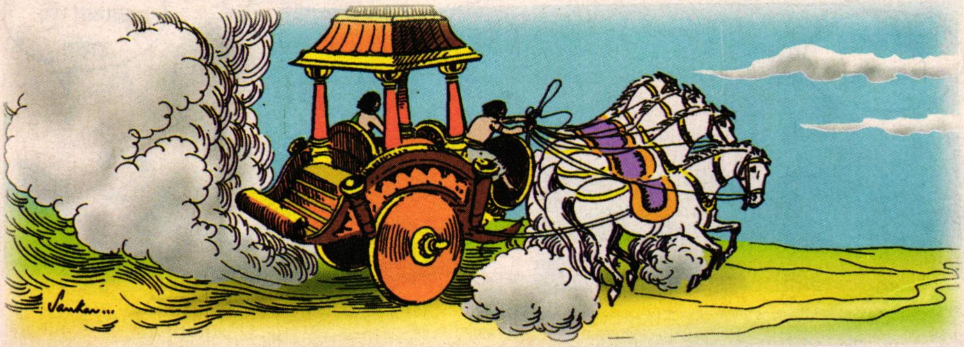

चुटकुला भेजें। एसएमएस करें CJOKE <आपका जोक> 54646 पर

जातक कथा
चन्दामामा द्वारा पुनर्कथित
फलदायी शुभ कार्य-२
राजा को समाचार देने के लिए वीरेन इन्तजार न कर सका!
महाराज! जंगल में एक खूबसूरत सफेद हाथी है!
उसे तो महल की शोभा होना चाहिए
क्या तुम जानते हो उसे कहाँ ढूँढ़ा जाए?
अवश्य महाराज! पुरस्कार के लिए...
राजा ने तत्काल वीरेन को सौ स्वर्ण मुद्राएँ दीं और अपने आदमी को उसकी सहायता हेतु भेजा।
थोड़े समय में ही सिपाहियों ने साथी को पकड़ लिया।
मुझे धोखा दिया गया!
मेरी बेचारी माँ... वह चिंतित होगी!
खाओ! खाओ! गूंगे हाथी!

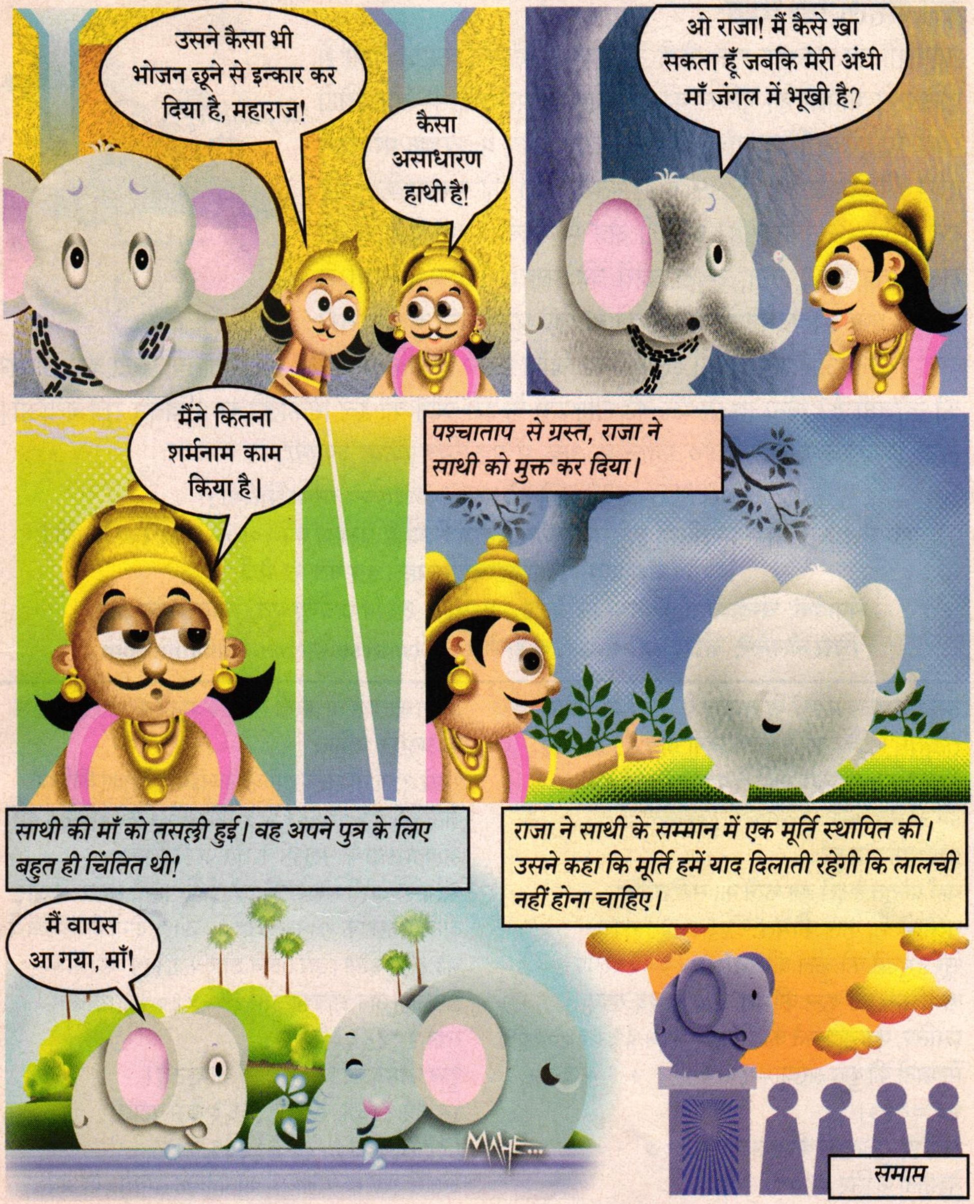

उसने कैसा भी भोजन छूने से इन्कार कर दिया है, महाराज!
कैसा असाधारण हाथी है!
ओ राजा! मैं कैसे खा सकता हूँ जबकि मेरी अंधी माँ जंगल में भूखी है?
मैंने कितना शर्मनाम काम किया है।
पश्चाताप से ग्रस्त, राजा ने साथी को मुक्त कर दिया।
साथी की माँ को तसल्ली हुई। वह अपने पुत्र के लिए बहुत ही चिंतित थी!
मैं वापस आ गया, माँ!
राजा ने साथी के सम्मान में एक मूर्ति स्थापित की। उसने कहा कि मूर्ति हमें याद दिलाती रहेगी कि लालची नहीं होना चाहिए।
समाप्त

तेज़ फार्मूला

इस महीने का प्रश्नः

बदमाशों का एक गुट एक नीली और एक स्लेटी रंग की दो कारों में पुलिस से भागता है। पुलिस को उस क्षेत्र की सभी नीली और स्लेटी कारों की इलैक्ट्रॉनिक जाँच करनी है। उत्तरी क्षेत्र में, सड़क पर नीली कारों की संख्या का १९५५ गुना, स्लेटी कारों की संख्या के ४७६ गुने से २४८२ ज़्यादा है। दक्षिणी क्षेत्र में सड़क पर नीली कारों की संख्या का ४७६ गुना, स्लेटी कारों की संख्या के १९५५ गुने से ४९१३ कम है। बदमाशों को पकड़ने के लिए पुलिस को कुल कितनी कारों (नीली और स्लेटी) की इलैक्ट्रॉनिक जाँच करनी है? कितनी नीली और कितनी स्लेटी कारें पुलिस को खोजनी हैं? बिना किसी यंत्र की सहायता के इस प्रश्न का हल निकालने का तीव्रतम सूत्र बताओ।

नोटः इसका हल जनवरी'१० महीने के अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

सबसे तेज़ सूत्र देने वाले को ५००/- रुपए का इनाम मिलेगा।

एक से अधिक सही प्रविष्टियाँ होने पर सफल प्रतिभागियों में प्रत्येक को १००/- रुपए दिए जाएँगे।

अपने प्रवेश फार्म ३० सितम्बर के पहले इस पते पर भेजें :

संपादक, चन्दामामा इण्डिया लिमिटेड, *२/५१३, संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेन रोड, चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१.* या ई-मेल करें: contests@chandamama.com

---

हमें सितम्बर महीने के सवाल के सारी प्रविष्टियाँ तीव्रतम तरीका को अपनाये बिना प्राप्त हैं। इसलिए किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है।

हमें अगस्त महीने के सवाल हेतु बहुत सी प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं:

यहाँ प्रस्तुत है इसे हल करने का सही तरीकाः

गुलाबों की कुल कीमत: २X१७=३४ रुपए

सूरजमुखी की कुल कीमत: ३X१३=३९रुपए

कमलिनी की कुल कीमत: ४X९=३६ रुपए

इसलिए, एक गुलदस्ते की कीमत= ३४+३९+३६=१०९

मेहमानों की कुल संख्या= १+ २ + १ + १ + ६२ + ४० =१०७।

इसलिए, गुलदस्तों की कुल कीमत १०७ मेहमानों के लिए =१०९X१०७

जब १०१ और १०९ के बीच की दो संख्याओं को गुणा किया जाता है तो जल्दी से उत्तर जानने के लिए इन स्टेप्स के अनुसार चलिए:

स्टेप १: दोनों संख्याओं की इकाइयों को गुणा कीजिए जैसे कि: ९X७ (१०९ से ९ और १०७ से ७) = ६३ इसे आपके उत्तर के RHS के तौर पर लिखिए।

स्टेप २: दूसरी संख्या की इकाई को पहली संख्या में जोड़ दीजिए जैसे कि १०९+७ या १०७+९ दोनों ही मामलों में यह ११६ होगा। इसे अपने उत्तर के LHS के तौर पर लिखिए। अब आपका उत्तर १०९X१०७ के परिणाम स्वरूप ११६६३ है।

कुल कीमत पर १० प्रतिशत की छूट है।

इसलिए ११६६.३ को ११६६३ में से घटाइए (११६६३ का १/१० है ११६६.३)

अंत में उत्तर है: विद्यालय को वार्षिक समारोह के अवसर पर १०४९६.७० रुपये की धनराशि चुकानी है।

क्या कहीं भुने टिड्डे खाए जाते हैं? जानें hindi.chandamama.com पर

यूरेका

अदृश्य स्याही

आपको क्या चाहिए:

- सफेद कागज़
- पेंटब्रश या टूथपिक
- बेकिंग सोडा
- पानी
- ताप स्त्रोत (१०० वाट का बल्ब)
- अंगूर का रस

कैसे करें:

- एक चम्मच बेकिंग सोडा और पानी मिलाएँ। यह हो जाएगी आपकी अदृश्य स्याही।
- एक टूथपिक या पेंटब्रश की सहायता से मिश्रण द्वारा अपना संदेश पेपर पर लिखें और इसे सूखने दें।
- अब आपका संदेश देखने के लिए दो तरीके हैं।
- प्रकाशित बल्ब के पास पेपर को पकड़ें। थोड़ी देर में संदेश दिखने लगेगा।
- आप अंगूर के रस को पेपर पर पेंट करके भी संदेश पढ़ सकते हैं।
- अन्य मिश्रणों जैसे नींबू का रस, दूध, सिरका और अन्य सामग्री के साथ प्रयोग करो और अपनी स्वयं की अदृश्य स्याही बनाओ!

अवधारणा:

अदृश्य स्याही प्रयोग दो आधारभूत सिद्धान्तों पर कार्य करता है। पहला ''ताप'' तथा दूसरा ''अम्ल-क्षार प्रतिक्रिया'' है। जब पेपर बल्ब के पास लाया जाता है तब बेकिंग सोडा पर ताप के प्रभाव के कारण संदेश दिखाई देने लगता है। पेपर को अंगूर के रस से पेंट करने पर अंगूर के रस (हल्का अम्ल) तथा बेकिंग सोडा (क्षार) के मध्य एक प्रतिक्रिया होती है जिसके कारण संदेश एक भिन्न रंग में प्रकट हो जाता है।

पेनिसिलिन एक आकस्मिक खोज थी। मज़ेदार तथ्य hindi.chandamama.com पर

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१०

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by Infosys FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

***यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।**

तुम्हें क्या करना चाहिये:

१. एक कागज पर उत्तरों को लिखो।

२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।

३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१०** लिखो।

४. तुम्हारे उत्तर ३० नवम्बर तक हमें मिल जाने चाहिये।

५. सही उत्तर जनवरी २०१० के अंक में प्रकाशित होंगे।

चाचा नेहरू के बारे में !

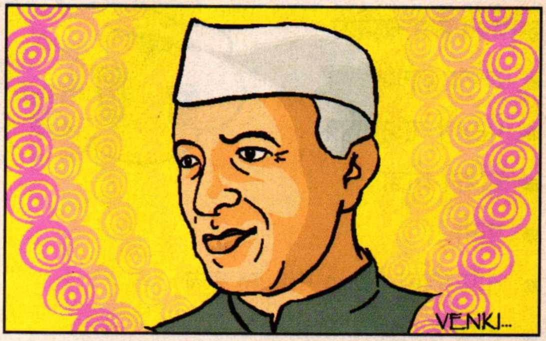

१. पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म दिन बाल दिवस किस वर्ष में घोषित किया गया?

२. नेहरू परिवार पहले 'कौल' उपनाम से जाना जाता था। उन्होंने अपना पारिवारिक नाम क्यों बदला?

३. नेहरू जी इंडियन नेशनल कॉंग्रेस में कब शामिल हुए?

४. नेहरू जी कितने समय तक हमारे देश के प्रधान मंत्री रहे?

५. जवाहर लाल नेहरू की तीन साहित्यिक रचनाओं के नाम बताइए।

६. नेहरू जी का पसंदीदा फूल कौन-सा था?

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

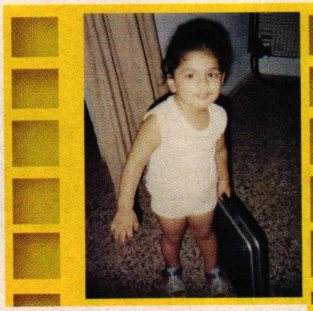

KALANIKETAN BALU

NARAYANAMURTHY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, २/५१३ (पुराना नं. ३/३९६), संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेईन रोड़, चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

नीविया थलयारी
D/o. श्री नीतेश थलयारी
प्रोसपैक्ट हाऊस चक्कर,
शिमला, हिमाचल प्रदेश,
पिन - १७१ ००५.

विजयी प्रविष्टि

पिल्लों को दूध ही भाता।
हंसों का है जल से नाता॥

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी- ८ सितम्बर २००९ उत्तर:

१. तमिल, संस्कृत, कन्नड़ और तेलगु। २. पाली और प्राकृत। ३. उर्दू। ४. बंगाली। ५. भाषाविज्ञान। ६. मेन्डेरिन। ७. २२। ८. भारत और बांग्लादेश।

नोटः कोई भी पूर्णतः सही प्रविष्टि नहीं मिली अतः किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है।

दुनिया के त्योहारों के बारे में जानने के लिए hindi.chandamama.com

पशुता

मोती खेती करता था और पिता के दिए पाँच एकड़ भूमि को उसने दस एकड़ों तक बढ़ाया। साथ ही ब्याज़ का व्यापार करते हुए लाखों रुपये कमाए। कभी आँगन में मुर्गियाँ और पशु रहा करते थे। अब उसने उनके लिए अलग-अलग झोपड़ियों की व्यवस्था की।

वह जीवन में हार जानता ही नहीं था, पर उसे हस्ताक्षर करना भी नहीं आता था। वह स्वादिष्ट भोजन करता था और तंदुरुस्त रहता था व बीमारी उससे कोसों दूर रहती थी।

हाँ, मानव के आधीन जो पशु होते हैं, वे स्वतंत्र नहीं होते, इसलिए वे भी ऐसी ही बाधाओं का सामना करते हैं जो मानव करते हैं। अगर ये पशु आज़ाद हों तो केवल उनकी अकाल मृत्यु होती है, वे कभी बीमार नहीं पड़ते। हमें अपना फर्ज़ निभाना है और परिणाम भगवान पर छोड़ना है। इसलिए पशु सदा संतुष्ट रहते हैं और हम मनुष्यों को यह पाठ सीखना है। वह बारंबार यही कहता रहता था।

जो उसे बखूबी जानते थे वे उसकी इन बातों पर आश्चर्य प्रकट करते थे क्योंकि मोती हमेशा नौकरों से कस कर काम कराता था। किसी पर वह कभी भी दया नहीं दिखाता था। ब्याज के विषय में वह बहुत ही कठोर रहता था। पत्नी और संतान को भी कडुवी बातों से जब देखो तब ठेस पहुँचाता था, उन्हें दुखी देखते हुए वह प्रसन्न होता था।

मोती की कठोरता व दुर्व्यवहार के कारण कितने ही परिवारों का सर्वनाश हुआ। लोगों को यह संदेह होता रहता था कि ऐसे आदमी को भगवान कैसे संतुष्ट रखते हैं। कितने ही लोग उसे शाप देते थे, पर उसका कुछ भी न बिगड़ता।

ऐसी स्थिति में वह प्रताप के शाप का शिकार हुआ। प्रताप एक दुबला-पतला आदमी था। परिवार को संभालने के लिए उसका एक मात्र आधार थी उसकी गाय। वह अकेली पाँच गायों के समान थी। सवेरे और शाम को वह पाँच सेर

बीरबल के चतुराईपूर्ण हल पढ़ें hindi.chandamama.com पर

दूध देती थी। उसका दूध श्रेष्ठ होता था, इसलिए लोग उसी का दूध खरीदने आते थे। प्रताप अपने घर के आदमी की तरह ही उसका आदर करता था। त्योहारों के अवसर पर देवता मान कर उसकी पूजा करता था।

दुर्भाग्यवश प्रताप की पत्नी बीमार पड़ गई। उसकी चिकित्सा के लिए उसे धन की आवश्यकता पड़ी। उसने मोती से धन उधार लिया पर निर्धारित समय पर लौटा न सका। मोती को अब एक उपाय सूझा। उसने धन न लौटा सकने के बहाने प्रताप की गाय ले ली। प्रताप बहुत गिड़गिड़ाया पर वह टस से मस न हुआ। प्रताप कुछ न कर सका। उसने क्रोध-भरे स्वर में इतना ही कहा, ''तुम्हें मेरा शाप लगेगा।''

इसके बाद स्वस्थ मोती ने एक ही दिन उस गाय का दूध क्या पिया, पहली-पहली बार वह बीमार पड़ गया। गाँव के सब लोगों ने यही कहा कि यह प्रताप के शाप का फल है। उसकी पत्नी ने भी जब यही कहा तो मोती ने कड़ुवे स्वर में उससे कहा, ''अगर यह शाप है तो मैंने इससे भी बड़े पाप किए हैं। उस समय जब कुछ नहीं हुआ तो भला अब क्यों होगा। ज़्यादा होशियार मत बनो, वैद्य को खबर भेजो।''

वैद्य ने सब प्रकार से परीक्षण किया और कहा, ''उस गाय का दूध ये पचा नहीं पा रहे हैं; वह इन्हें रास नहीं आया।'' उस गाय को जब पशु-वैद्य को दिखाया गया तो मालूम हुआ कि वह बीमार है। उधर गाय की और इधर मोती की

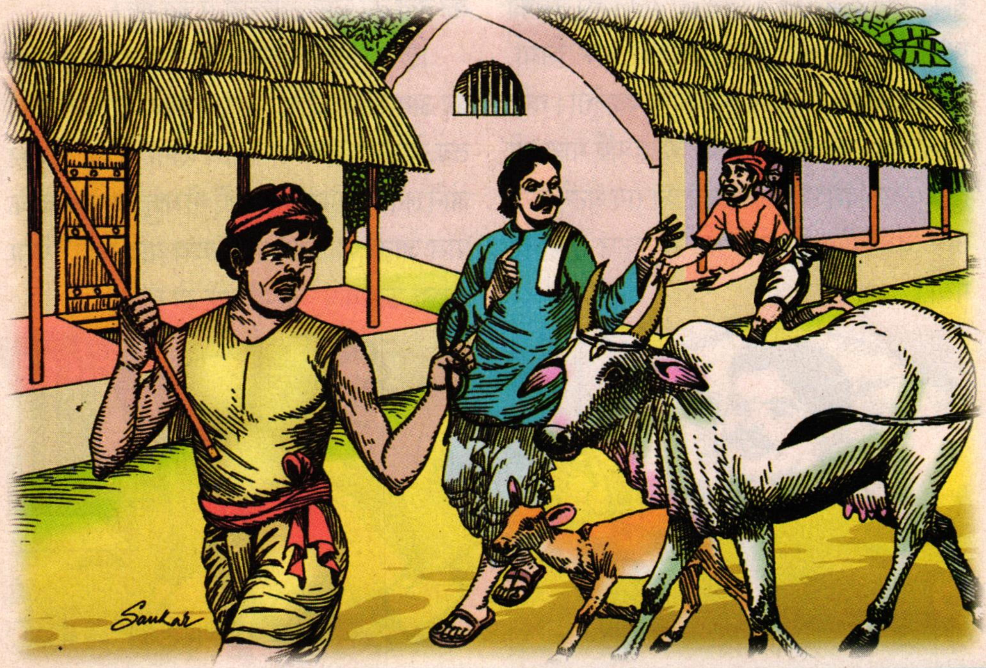

कहानी 'सुधीर चला शहर को' hindi.chandamama.com पर

चिकित्सा शुरू कर दी गई, परंतु दोनों की हालत दिन-ब-दिन बुरी होती गई। आखिर एक दिन उसकी पत्नी ने कह डाला, ''आपकी बीमारी दवाओं से ठीक होने वाली नहीं है। वह गाय प्रताप की याद में बीमार है। वहाँ जाने के लिए ही वह तड़प रही है। वह वहाँ जाएगी तो ठीक हो जाएगी। तब प्रताप खुश होगा और आपकी बीमारी भी दूर हो जाएगी। मेरी बात मानिए और उस गाय को प्रताप के यहाँ भेज दीजिए।''

मोती चिढ़ता हुआ बोला, ''मेरी जान भी क्यों न चली जाए, मैं गाय प्रताप के यहाँ भेजनेवाला नहीं हूँ। असल में पूरी गलती तुम्हारी है। मुझे संदेह हो रहा है कि मुझे जो दवाएँ देनी हैं वे गाय को और गाय को जो दवाएँ देनी हैं वे तुम मुझे दे रही हो।'' पति के दुराग्रह व ज़िद को देखते हुए उसकी पत्नी तंग आ गई। उसने निश्चित कर लिया, नतीजा जो भी हो, दोनों की दवाएँ बदलूँगी। गाय की दवाएँ पति को और पति की दवाएँ गाय को दूँगी। उस दिन से लेकर मोती का रोग घटने लगा और चार पाँच दिनों में वह बिलकुल ठीक हो गया।

''देख लिया, प्रताप के शाप का कोई भी प्रभाव मुझ पर नहीं पड़ा, मानती हो ना?'' गर्व भरे स्वर में मोती ने पत्नी से कहा।

''इसमें आपको घमंड करने की ज़रूरत नहीं। मानवों में पशुता देखने वाले आप में क्रमशः पशुता ने प्रवेश किया और पशुओं में मानवता देखने वाले प्रताप की गाय में मानवता ने घर कर लिया है। इसी कारण से आपको पशुओं की दवाएँ और गाय को मानव की दवाएँ काम कर गईं। इस सच्चाई को स्वीकार कीजिए।'' उसकी पत्नी ने सहज स्वर में कहा।

मोती ने पत्नी की बातों में छिपी सच्चाई को जान लिया और अपनी गलती मान ली। उस दिन से उस में काफी परिवर्तन आया। उसके सद्व्यवहार को देख कर लोग आश्चर्य में डूब गए।

छिपाने की कोशिश की गई परंतु इन दवाओं की अदली-बदली की बात सबको मालूम हो गई। तब से दुर्व्यवहार करने वाले लोगों के बारे में कहा जाने लगा, ''बीमार पड़ जाएँ तो पशु चिकित्सक के पास जाना चाहिए। यह अवश्य याद रखें।'' ऐसा कहना उस गाँव की परिपाटी हो गयी।

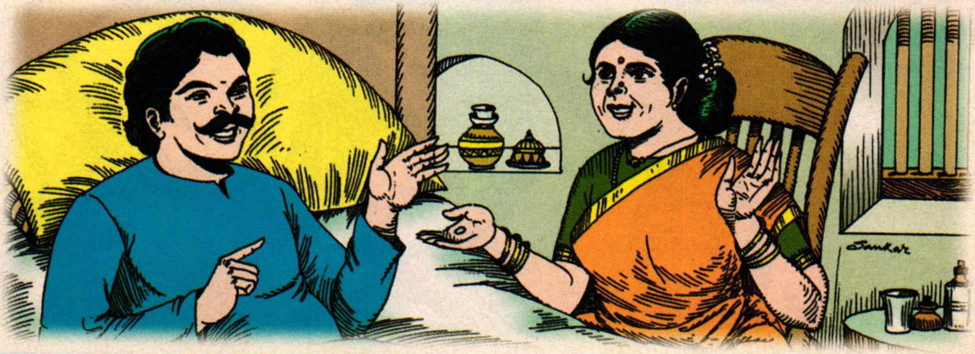

उस अजीब से सपने की कहानी hindi.chandamama.com पर

देविका मेरी इकलौती पुत्री है। मैंने भरसक कोशिशें कीं, परंतु उसका विवाह संपन्न हो नहीं पा रहा है। बिन माँ की कन्या है। उसका विवाह हो जाए तो सब चिंताओं से मुक्त हो जाऊँगा। परंतु जो भी उसे देखने आता है बिना कुछ कहे चला जाता है। अब आप ही मेरा उद्धार कर सकते हैं। आप ही इस समस्या का समाधान कर सकते हैं।''

संन्यासी ने पिता और बेटी दोनों को बड़े प्यार से निहारा और मुस्कुराते हुए उसे भी भस्म दिया।

राजा उस समय व्यापारी के वेश में था। वह संन्यासी के आगे आया और कहा, ''स्वामीजी, कृपया बताइये कि उस कन्या का विवाह कब होगा?''

संन्यासी ने उसे नख से शिख तक देखा और तीन मिनटों के बाद आँखें खोलते हुए कहा, ''एक हफ्ते के अंदर इस कन्या का विवाह होगा।''

देविका का पिता पहले ही कह चुका था कि जो भी उसे देखने आता है, बिना कुछ कहे वापस चला जाता है और यह संन्यासी दावे के साथ कहता है कि उसका विवाह एक हफ्ते भर में होगा। देखना है क्या होगा। राजा ने मन ही मन सोचा कि इस संन्यासी के ढोंग का पर्दाफ़ाश करने के लिए यह एक अच्छा मौक़ा है। वह देविका के पिता को थोड़ी दूर ले गया और अपना असली परिचय देते हुए उससे कहा, ''अपनी बेटी को मेरे साथ भेजना। एक हफ्ते तक अंतःपुर में सुरक्षित रखूँगा। कोई कमी नहीं आने दूँगा। उसके

बाद उसका विवाह करना मेरी ज़िम्मेदारी है।''

राम ने सहर्ष मान लिया। राजा देविका को अपने साथ ले गया और उसे रानी के सुपुर्द कर दिया। रानी से कहा भी कि एक हफ्ते तक उसकी अच्छी तरह देखभाल करना। सुंदर देविका को देख कर रानी बहुत प्रसन्न हुई। उसने अपनी परिचारिकाओं को आज्ञा दी कि सभी सहूलियतों का प्रबंध हो और कोई कमी न हो।

इधर प्रजा ने शिकायत की कि वन्य मृगों ने गाँवों में आतंक मचा रखा है जिसके कारण गाँव वालों को बड़ी तकलीफें सहनी पड़ रही हैं और गाँवों में रात दिन भय का माहौल है। राजा तीसरे दिन शेरों के शिकार के लिए सिपाहियों को लेकर निकल पड़ा। गाँवों और जंगल की सीमा पर ही डेरा डाल कर उनकी समस्या को दूर किया।

अलग-अलग राज्यों की लोक कथाएँ hindi.chandamama.com पर

अपने चन्दामामा का मूल्यांकन करो

पत्रिका में सबसे पसंदीदा धारावाहिक कहानी कौन सी है?

a. अनुनिर्वा b. पाताल दुर्ग c. रामायण

आप अपना उत्तर RYC <a/b/c> लिखकर 54646 पर SMS कर दो।

सितम्बर २००९ का परिणाम:

a: 60%; b: 10%; c: 30%

तत्पश्चात् दो दिन बाद राजा को अकस्मात् देविका की याद आयी जो अंतःपुर में रह रही थी। संन्यासी की बतायी मियाद आज ख़त्म होने को है। संन्यासी की कलई आज खुलने वाली है। यह सोचते हुए राजा बड़े ही उत्साह के साथ राजधानी की ओर निकल पड़ा।

राजा ने जैसे ही राजभवन में कदम रखा सामने से रानी सुनंदा देवी आयी और कहने लगी, "प्रभु, आपके जाने के बाद हमारा पुत्र अमरेंद्र देश परिभ्रमण से लौट आया है।" राजा ने देविका के बारे में विवरण जाना। तब रानी बोली, "महाराज, मेरी जानकारी के बिना पुत्र अमरेंद्र ने देविका से गंधर्व विवाह कर लिया। उसका कहना था कि शायद मैं और आप उसे इस विवाह के लिए अपनी स्वीकृति नहीं देंगे अतः उसने यह कदम उठाया।"

राजा दिग्भ्रांत रह गया। वह गिरने ही वाला था कि अपने को सँभाल लिया। उसने सोचा अगर वह अंतःपुर में ही रहा होता तो यह विवाह नहीं होता। थोड़ी देर के बाद पत्नी समेत पुत्र अमरेंद्र वहाँ आया और पति-पत्नी ने राजा के पैर छूते हुए प्रणाम किया। हफ्ते भर में संन्यासी के कहे अनुसार यह विवाह संपन्न हुआ, इसलिए राजा क्रोधित नहीं हुआ। उसे लगा कि संन्यासी को विधि-लेखा पहले से ही ज्ञात है। उसने वर-वधू को सहर्ष आशीर्वाद दिया।

दूसरे दिन पुत्र और बहू को लेकर राजा पत्नी समेत संन्यासी के दर्शन करने उस स्थल पर गया पर संन्यासी वहाँ दिखाई नहीं पड़ा। राजा ने मन ही मन उसे सादर प्रणाम किया और सोचा कि वह यह जानता होगा कि मैं यहाँ का राजा हूँ। ऐसी घटनाएँ अक्सर घटती रहती हैं जिनकी हम सपने में भी कल्पना नहीं कर पाते। वह संन्यासी निश्चय ही महान योगी है।

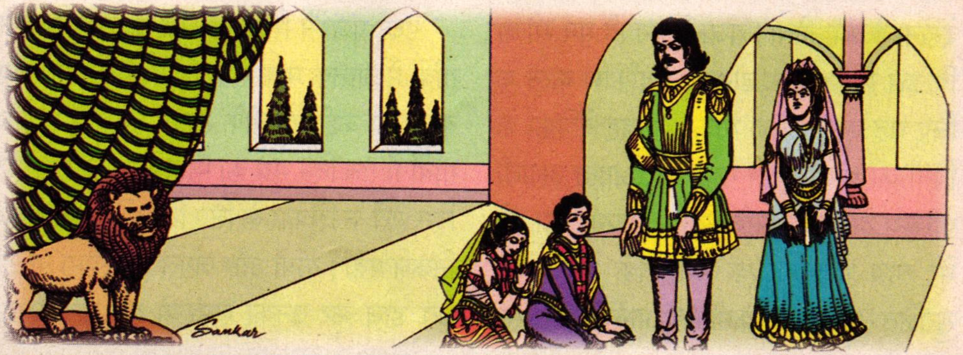

जल्दी से कुछ पढ़ना है? लघु कथाएँ hindi.chandamama.com पर

ITC Limited

Kuch bhi karega for CANDYMAN

Colour this Candyman picture and win exciting prizes!!

Log on to www.mycandymanclub.com REGISTER, EARN POINTS & WIN EXCITING GIFTS!

Just three steps for winning many exciting Candyman Prizes:

- Fill some colours in your Candyman friend's life.
- Complete the slogan 'I like Candyman because...' in not more than 10 words.
- Complete all the details about yourself and send it by December 15, 2009 to:
  Chandamama India Ltd, New no. 2/513 (Old no. 3/396)
  Sandeep Avenue East, 2nd Main road Chinna Neelankarai, Chennai-41.

I like Candyman because ....

Name: .... ☐Boy ☐Girl Age: .... Address: ....

Ph. No.: ....

School: .... Class: .... E-mail ID: ....

TERMS AND CONDITIONS

1. This contest is open to all residents of India.
2. The participants understand that sending entries implies acceptance to the terms and conditions of this contest.
3. The entries for this contest shall be sent by ordinary post to Chandamama India Ltd, New no. 2/513 (Old no. 3/396) Sandeep Avenue East, 2nd Main road Chinna Neelankarai, Chennai-41 on or before December 15, 2009
4. Incomplete and/ or illegible entries shall be disqualified.
5. This contest is not open to employees of ITC Limited and Chandamama India Ltd and their family members.
6. ITC Limited reserves the right to extend, cancel, discontinue, withdraw, change, alter or modify this contest or any of the terms thereof with or without notification and without assigning any reason.
7. The winners of this contest shall be selected by a panel of judges appointed by ITC Limited.
8. The decision of ITC Limited will be final and binding with regard to any dispute arising out of this contest and is non-contestable. No correspondence shall be entertained in this regard.
9. The prizes shall be sent to the winners at the addresses specified in the entries sent by them and ITC Limited shall not be responsible if the winners are unavailable at such addresses.
10. ITC Limited and Chandamama India Ltd shall not be liable for incorrectly addressed or undelivered entries or for disruption, delay or non-receipt of entries due to postal delays or any other reason.
11. Prizes are non-transferable, non-negotiable, subject to availability and cannot be exchanged for cash.
12. ITC Limited shall not be liable for any loss expense or damage which may be suffered in connection with this contest or accepting or using any prize given under this contest.
13. All disputes in connection with or arising out of this contest are subject to the jurisdiction of courts located at Bangalore.

लड़ाकू पेशवा

सतारा शहर, मराठा राज्य, मई सन् १७२७ ईसवी

किले के सबसे ऊपर का एक छोटा प्रकाशवान और हवादार कमरा। वह एक खंभे से दूसरे तक चिंतातुर घूम रहा था। उसकी मज़बूत उँगलियाँ हाथ में पकड़े एक पत्र को टुकड़े-टुकड़े कर रही थीं।

''...बादशाह के आदेश को ध्यान में रखते हुए कोल्हापुर के राजा शंभु जी, जो स्वयं भी शाहू का प्रतिद्वंदी है, को मैंने अपनी ओर कर लिया है और शाहू को सज़ा देने व जान से मारने के कार्य में लगा दिया है। मुझे पूर्ण आशा है कि शाहू के कट्टर समर्थक भी उसे जल्दी ही छोड़ देंगे और उसके गुट का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। फिर ईश्वर की दया, बादशाह की सहानुभूति और सहायता पर विश्वास करके मैं मराठाओं को चुनौती दूँगा।''

''महाराज- महामहिम, पेशवा।''

''शुक्रिया भगवान का!'' राजा शाहू नवागंतुक के स्वागत के लिए जल्दी से जाते हैं। ''मुझे अत्यधिक खुशी हुई कि आप आ गए।''

''पढ़ो इसे।'' राजा ने पत्र उसके हाथों में थमा दिया। उसके मेहमान ने एक उड़ती हुई नज़र उस पर डाली। ''इससे केवल इतना पता चलता है कि हमें उखाड़ फेंकने के लिए मुगल नुमाइन्दा पहला मौका मिलते ही हमें झपट लेगा।''

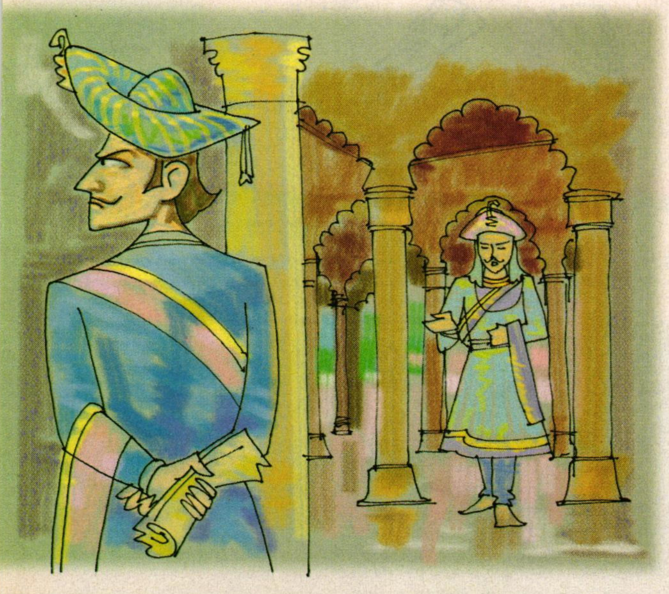

''लेकिन दक्षिण में वह हमारा पक्षधर था,'' राजा दुखी स्वर में बोला। ''निज़ाम की हार पर शकरखन्ड में मुबरिज़ खान का क्या हुआ? तुमने जीतने में उसकी मदद की...''

''बिलकुल, निजाम-उल-मुल्क, जो कि दिल्ली के मुगल दरबार में प्रधान मंत्री पद का भूखा रहा है, अपनी इस हार से अत्यंत निराश हुआ है और उसे हम पर निकालना चाहता है,'' पेशवा ने भावहीन होकर कहा। और वहाँ

सारी दुनिया के रुचिकर समाचार पढ़ें hindi.chandamama.com पर

संयुक्त अभियान के तहत हमारे कर्नाटक पर आक्रमण की बातें भी हो चुकी हैं। क्या तुम सन्देह करते हो कि शंभू जी उत्तेजित थे।''

''क्या हमें हमेशा ही प्रतिद्वंद्वियों तरह लड़ते रहना है?'' शाहू हैरान रह गया।

''राजा शंभू जी वर्षों से तुम्हारी जगह लेना चाहते हैं,'' पेशवा ने कहा। ''वह और उसकी माँ ने तुम्हारी बड़ी माँगों पर ध्यान देने से इन्कार कर दिया है - लेकिन ऐसा लगता है कि वे बेकार की उम्मीदें लगा बैठे हैं।

शाहू ने हाथ फैलाए। ''अब क्या मेरे दूरदर्शी प्रधान मंत्री जी?''

''कोई भी राजा युद्ध से बच नहीं सकता-लेकिन हम यह विश्वास दिला सकते हैं कि यह इस प्रकार नियोजित किया गया हो कि लोगों को अधिकाधिक विभीषिका से बचा दे।

शाहू अचानक घूमा। उसके लिए कुछ अनिश्चिताएँ अब भी रह गयी थीं - या शायद यह निराशा थी। ''तुम जवान हो,'' उसने धीरे से कहा। ''मेरा तुमसे यह कहने का अधिकार नहीं है। लेकिन मराठाओं का सम्मान तुम्हारे हाथों में है।''

पेशवा बाजी राव मुस्कुराए। ''रक्षा करना, यह तो एक सम्मान होगा, महाराज।''

* * *

जालना के आस-पास का क्षेत्र, उत्तरी मराठवाड़ा राज्य, नवंबर, सन् १७२७ ईसवी

''उन्हें दौड़ते हुए देखो!'' एक योद्धा अभद्रता से हँसा।

इवाज़ खान, दक्कन के निज़ाम की फौज के फौजदार, ने खीसें निपोरीं। ''इसलिए, लड़ाकू पेशवा निज़ाम के तूफानी आक्रमण के सामने टिक नहीं सका, क्या वह टिक सका? एक गठा हुआ आक्रमण और वे एक साधारण से मुकाबले में भाग गए।''

''वे किस ओर जा रहे हैं?'' उसने पूछा, ''बुरहानपुर की तरफ।''

''पीछा करो उनका!''

* * *

निज़ाम कमरद-दीन चिन क़िलिज ख़ान आसिफ़ जाह - एक की सेना का शिविर, पूना के आस-पास का क्षेत्र, जनवरी, सन् १७२८ ईसवी।

''**फ**तह लगातार हमारी हो रही है, सरकार,'' इवाज़ ख़ान मुस्कुराया। उसके सामने दक्कन का निज़ाम अपनी बकरे जैसी दाढ़ी वाली ठोढ़ी को मुट्ठियों से ढके बैठा था। ''कुदरती तौर पर-वे

गरुड़ जैसी और कॉमिक्स? एसएमएस COMIC <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

अपने ख़स्ता हाल तीरों, भालों और कमानों से क्या कर सकते हैं? कितनी सीमा-चौकियाँ हैं अब?''

''अल्लाह कारसाज़ है! हमने उदापुर, अवसरी, पबल, खेड और नारायणगढ़ कब्ज़े में कर लिया है, सरकार। सूपा, पतस और बारामती, और मराठा मिट्टी में मिला दिए जाएँगे।''

''बहुत बढ़िया।'' निज़ाम के हाथों ने शीशे का एक प्याला टुकड़े-टुकड़े कर दिया। ''मैं अपने प्यारे शहर औरंगाबाद के दरवाज़ों को लड़ाकू पेशवा की ख़ाल और हड्डियों से सजा हुआ देखूँगा।''

* * *

पेशवा बाजी राव की सेना का शिविर, कसरबाई दर्रा, जनवरी, सन् १७२८ ईसवी

''**प**हाड़ियों के पीछे सूरज डूब रहा था। एक तंबू के अंदर एक छरहरा नौजवान अपनी योजना तैयार कर रहा था, उसकी उँगलियाँ नक़्शे पर घूम रही थीं। उसके सैन्य-अधिकारी थके हुए और चिंता मग्न उसके पास में बैठे थे।

''महामहिम,'' एक बोला। ''शंभुजी और चंद्रसेन निज़ाम से मिल गए हैं। जिन सीमा-चौकियों पर उन्होंने कब्जा कर लिया है उनकी सूची बहुत ही बड़ी है।''

''इस युद्ध को जीतने की कोई उम्मीद नहीं है,'' दूसरे ने कहा। जब उसने ऊपर देखा, पेशवा बाजी राव की आँखों में एक चमक आयी। ''तुम्हें पता है, हमारे यहाँ एक पुरानी कहावत है- शौर्य से दूरदर्शिता अधिक महत्त्व रखती है। निज़ाम ने बहुत विजय प्राप्त की होंगी; वे आखिर तक नहीं जीत पाएँगे।''

''लेकिन उन्होंने पूना को तहस-नहस कर दिया है- हमें स्वयं राजा ने वापस बुलाया है...''

''हम नहीं जा रहे,'' बाजी राव ने घोषणा की। ''हम उन्हें राज्य के चारों ओर अपने पीछे दौड़ाएँगे- और वे अपनी विजय के दंभ में हैं। अब समय है आक्रमण का।''

* * *

निज़ाम क़मरद-दीन की सेना का शिविर, पालखेड, २५ फरवरी, सन् १७२८ ईसवी.

तीन आदमी एक-दूसरे की ओर मुँह करके खड़े हुए थे, उनके चेहरे पर उन्माद की चादर पड़ी हुई थी। ''तुमने कहा कि तुम पीछे और अगल-बगल ध्यान रखोगे!'' निज़ाम ने पूछा।

अपने सभी दोस्तों को भेजें मुफ़्त एसएमएस hindi.chandamama.com से

''जब बाजी राव हमें लूट रहा था तब कहाँ गई तुम्हारी युक्तिपूर्ण चतुराई?''

''हमने उससे यह उम्मीद नहीं की थी कि वह औरंगाबाद पर हमला बोल देगा,'' चन्द्रसेन ने कहा।

''तुम्हें पता है, बाजी राव के आदमी बिना किसी भारी-भरकम अस्त्र-शस्त्र, सामान और हाथ की बंदूकों के वज़न के गए थे,'' शंभुजी ने कहा। ''बिना मुख्य शहरों को हाथ लगाए वे तेज़ी से जा पाए।''

''वह पूरब, पश्चिम और उत्तर- हम सब के आगे चलता हुआ- हमें हरेक चौकी पर दौड़ाते हुए और भगाते हुए तेजी से अपने पीछे ले जा रहा था!'' निज़ाम दहाड़ा। ''हमने सोचा वह पीछे हट रहा है- और अब वह हमारे ऊपर वहाँ आक्रमण कर रहा है जहाँ वह चाहता है- न पानी, न खाना और मेरी फौज अब लड़ नहीं पाएगी!''

''अब क्या?'' आखिरकार चन्द्रसेन ने पूछा। निज़ाम के आदेश पर इवाज़ ख़ान अंदर आया। ''बाजीराव पेशवा को हमारी बुरी हालत के बारे में पैग़ाम भेजो,'' वह रुका क्योंकि सभी उसे भय से देख रहे थे। ''उसे बताओ कि हम उसकी शर्तों पर, चाहे वे जो भी हों, संधि करना चाहते हैं।''

* * *

सभाकक्ष, सतारा शहर, मार्च २५, सन् १७२८ ईसवी.

''...और इस प्रकार मुंगी-पैथान में एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गएः राजा शाहू हमारे निर्विरोध असली छत्रपति हैं; छः सुभाष के चौथ

और सरदेशमुखी पूरी तरह दिए जाएँगे। साथ में सभी जीती हुईं चौकियाँ मराठाओं की सुरक्षा में वापस की जाएँगी।''

संदेशवाहक के संधि की शर्तें पढ़ते ही राज दरबार खुशी से भर उठा। राजा शाहू खड़े हुए। ''ये रहे हमारे साहसी पेशवा जो हमारी विजय के साथ हमारे पास लौटे हैं,'' नौजवान आदमी की ओर इशारा किया। ''बाजीराव, हमें बताओ-कैसे हमने अपने दुश्मन को गिरायें, जो हमारे ऊपर एक विशाल पेड़ की भाँति फैल गया है?''

पेशवा की पैनी नज़र छत्रपति पर रुक गई।''

''हमला, पेड़ के तने पर हमला और शाखाएँ अपने आप गिर जायेंगी। लेकिन, सरकार, मैं मराठा का झंडा अटक की दीवार पर लगाऊँगा।''

दरबार सहमति में दुबारा चिल्लाया। ''ईश्वर की कृपा,'' शाहू भावावेश में बोला, ''तुम इसे हिमालय पर लगाओगे।'' **- *पवित्रा श्रीनिवासन***

नए संगह अच्छे हैं? ARCHIVES <आपका प्रतिक्रिया> 54646 पर एसएमएस करें

चूँ चूँ का डिब्बा

नीचे दी गई सूची देखिए और अपनी भाषा में उन्हें पढ़िए। तत्पश्चात् नीचे सूची देखिए और सीखिए उन्हें अन्य भाषाओं में कैसे कहते हैं और कैसे लिखते हैं।

English	School	Book	Cat	Write	Number
Hindi	पाठशाला	पुस्तक	बिल्ली	लिख	संख्या
Telugu	బడి बडि	పుస్తకం पुस्तकम	పిల్లి पिल्लि	రాయడం रायडम	సంఖ్య संख्य
Tamil	பள்ளி पल्लि	புத்தகம் पुत्तकम	பூனை पूनै	எழுது एलुदु	எண் एण
Bengali	বিদ্যালয় बिद्यालय	বই बइ	বিড়াল बिड़ाल	লেখা लेखा	সংখ্যা संख्या
Marathi	शाळा शाला	पुस्तक पुस्तक	मांजर मांजर	लिहा लिहा	संख्या संख्या
Kannada	ಶಾಲೆ शाले	ಪುಸ್ತಕ पुस्तक	ಬೆಕ್ಕು बेक्कु	ಬರೆಯುವುದು बरेयुवुदु	ಸಂಖ್ಯೆ संख्ये
Oriya	ବିଦ୍ୟାଳୟ बिद्यालय	ବହି बहि	ବିଲେଇ बिलेय	ଲେଖ लेख	ସଂଖ୍ୟା संख्या
Gujarati	શાળા शाला	ચોપડી चोपडी	બિલાડી बिलाडी	લખવું लखवुं	આંકડા आंकडा
Assamese	বিদ্যালয় बिद्यालय	কিতাপ किताप	মেকুৰী मेकुरी	লিখা लिखा	সংখ্যা हंख्या
Malayalam	വിദ്യാലയം विद्यालयम	പുസ്തകം पुस्तकम	പൂച്ച पूच्च	എഴുതുക एलुतुक	സംഖ്യ संख्य
Santali	ᱟᱥᱲᱟ आसड़ा	ᱯᱚᱛᱚᱵ पोतोब	ᱯᱩᱥᱤ पुसि	ᱚᱞᱢᱮ ओलमे	ᱮᱞᱮᱞ एलेल
Sanskrit	विद्यालयः विद्यालयः	पुस्तकम् पुस्तकम्	मार्जारः मार्जारः	लिख लिख	संख्या संख्या

तिरछे लिखे शब्दों को ऊपर दी गई तालिका में ढूँढ़िए।
उनका अर्थ देखिए और रिक्त स्थान भरिए!

१. मेरे ***बिद्यालय*** में .... छात्र हैं।
२. मेरी पसंदीदा ***पोतोब*** .... है।

टेनिस, गोल्फ़, बॉक्सिंग? जानें hindi.chandamama.com पर

English	Game	Friend	Mango	Science	Mother
Hindi	खेल	दोस्त	आम	विज्ञान	माँ
Telugu	ఆట आट	స్నేహితుడు स्नेहितुडु	మామిడి मामिडि	విజ్ఞానం विज्ञानम	అమ్మ अम्म
Tamil	விளையாட்டு विलैयाट्टु	நண்பன் नणबन	மாங்காய் माङ्गाय	விஞ்ஞானம் विज्ञानम	அம்மா अम्मा
Bengali	খেলা खेला	বন্ধু बन्धु	আম आम	বিজ্ঞান विज्ञान	মা मा
Marathi	खेळ खेल	मित्र मित्र	आंबा आंबा	शास्त्र शास्त्र	आई आई
Kannada	ಆಟ आट	ಸ್ನೇಹಿತ स्नेहित	ಮಾವು मावु	ವಿಜ್ಞಾನ विज्ञान	ಅಮ್ಮ अम्म
Oriya	ଖେଳ खेल	ସାଙ୍ଗ साङ्ग	ଆମ୍ବ आम्ब	ବିଜ୍ଞାନ बिज्ञान	ମା मा
Gujarati	રમત रमत	મિત્ર मित्र	કેરી केरी	વિજ્ઞાન विज्ञान	મા मा
Assamese	খেল खेल	বন্ধু बन्धु	আম आम	বিজ্ঞান बिज्ञान	মা मा
Malayalam	കളി कलि	കൂട്ടുകാരൻ कूट्टुकारन	മാങ്ങ माङ्ग	ശാസ്ത്രം शास्त्रम	അമ്മ अम्म
Santali	ᱮᱱᱮᱡ एनेज	ᱡᱚᱴᱟᱣ जोटाव	ᱩᱞ ऊल	ᱥᱟᱬᱮᱥ साणेश	ᱟᱭᱚ आयो
Sanskrit	क्रीडा क्रीडा	मित्रम् मित्रम	आम्रम् आम्रम	विज्ञानम् विज्ञानम	माता माता

३. एक ***मांजर*** .... खाना पसंद करती है।
४. ***लेख*** का उड़िया में मतलब है........................।
५. मेरा भाग्यशाली ***आंकडा*** .... है।
६. .... एक अंतर्द्वीय ***खेला*** का उदाहरण है।
७. मेरा ***कूट्टुकारन*** और मैं एक दूसरे को .... वर्षों से जानते हैं।
८. मेरे पसंदीदा किस्म का ***मामिडि*** .... है।
९. .... ***विज्ञानम*** का एक प्रकार है जो कि जीवन के अध्ययन के तौर पर जाना जाता है।
१०. मेरी ***अम्म*** .... पहनना पसंद करती हैं।

अपने सभी दोस्तों को भेजें मुफ़्त एसएमएस hindi.chandamama.com से

पाताल दुर्ग-१६

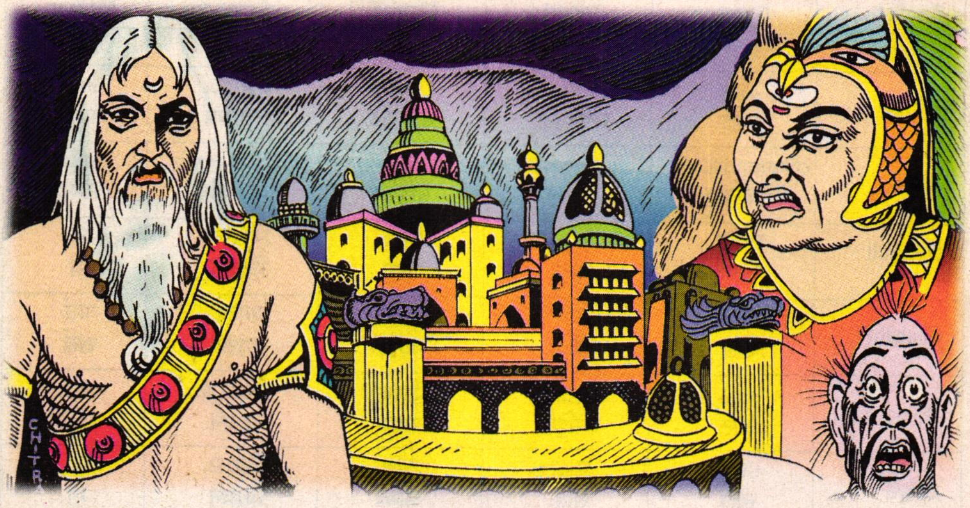

(जल पीते हुए वह मानो किसी गुप्त द्वार की चाबी पर खड़ा हो गया था क्योंकि तुरंत ही जलपतन बन्द हो गया और जहाँ पानी बह रहा था वहाँ उनको ऐसा लगा, जैसे कोई द्वार हो। घबराकर, वे लगातार उसकी ओर देखते जा रहे थे। उन्हें मान्त्रिक कालशम्बर की छाया दिखाई दी। जब वे तीनों चुपचाप उस तरफ गए, तो द्वार खुल गए। वह भी एक गुफा थी। उसके बाद-)

उस गुफा में अंदर लपटें उठ रही थीं। गुफा में लपटें देखते ही धूमक द्वार पर ही रुक गया। सोमक और विरूप ने अपने हथियार हाथ में ले लिए। विरूप के कंधे पर बैठे काले गरुड़ ने ज़ोर से पंख फड़फड़ा कर उड़ने का प्रयत्न किया।

''कालशम्बर मान्त्रिक कहाँ है? ऐसा लगता है जलप्रपात जादू हो। ये लपटें कैसी हैं? कहीं इनमें धोखा तो नहीं है?'' कहते हुए विरूप ने एक कदम आगे रखा और धूमक के कन्धे पर से झाँक कर देखा।

''कौन है यह? जंगल का नायक विरूप है क्या?'' इन प्रश्नों के साथ ही लपटों के पीछे से कालशम्बर मान्त्रिक दिखाई दिया। विरूप ने दोनों हाथ उठा कर मान्त्रिक को नमस्कार किया और वहीं द्वार पर उसे साष्टांग प्रणाम किया।

मान्त्रिक मुस्कुराता हुआ द्वार के पास आया। उसने इस प्रकार हाथ उठाया, जैसे विरूप को आशीर्वाद दे रहा हो, ''ये दोनों कौन हैं?'' उसने आश्चर्य से प्रश्न किया। विरूप उठ कर अभी जवाब भी नहीं दे पाया था कि उसने स्वयं पूछा,

देवी भागवत की कहानियाँ पढ़ें hindi.chandamama.com पर

''तुम कदम्ब देश के हो न? तुम्हारे राजा उग्रसेन के क्या हालचाल हैं? तुम्हारे राज्य की सीमा पर मुझ पर निशाना साध कर बाण छोड़ने वाला कौन था, तुम दोनों में?''

कालशम्बर से स्नेह जताने का यही अच्छा मौका था, धूमक ने मन में विचार किया। उसने आगे बढ़ कर मान्त्रिक को नमस्कार किया और कहा, ''महामान्त्रिक, उस पहाड़ी ईला के अंधेरे में कोई गलती हो गई। मैं उसके लिए अपनी और अपने साथी सोमक की तरफ से क्षमा प्रार्थी हूँ। यह है आपका मन्त्रदण्ड इसकी सहायता से ही हम इतनी दूर आ पाए हैं।

कालशम्बर ने मन्त्रदण्ड लिया और उसे आँखों पर लगा कर कहा, ''जो हुआ उसे भूल जाओ। अब बहुत कुछ करने को है। तुम गुफा में आ जाओ।''

धूमक आदि सब गुफा में आ गए। तुरंत ही गुफा के द्वार पर पत्थर का तख़्त गिर गया और फिर से पहले की ही भाँति जलपतन शुरू हो गया और ज़ोरों की ध्वनि होने लगी। द्वार का मुख भी बन्द हो गया।

मान्त्रिक लपटों वाली गुफा में से एक और गुफा में गया। वहाँ ऊपर से खूब प्रकाश आ रहा था। वहाँ से भूमि में एक मार्ग था। मान्त्रिक उसी पर धूमक आदि को धीमे-धीमे नीचे ले गया।

धूमक और सोमक को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। अत्यंत छोटी संकरी दिखने वाली गुफा अंदर से एक गाँव के समान थी। वहाँ

बड़ी ही तीव्र गति से कुछ कार्य चल रहा था। वहाँ भूमि समतल थी। पहाड़ में कुछ ऐसी गुफाएँ बनी हुई थीं कि आदमी वहाँ आराम से रह सकते थे। उनके सामने आँगन में कुछ लोग काम कर रहे थे। कई बड़े-बड़े मूसलों से ओखलों में पेड़ों के पत्ते और जड़ें कूट रहे थे और कई उस कुटी चीज़ को चटाइयों पर फैला रहे थे।

कालशम्बर पीछे की ओर मुड़ा। अपने पीछे आने वालों की ओर मुस्कुराते हुए उसने उनसे कहा, ''शायद तुम्हें आश्चर्य हो कि यह सब क्या है?''

धूमक ने सिर हिला कर हामी भरते हुए अपनी उत्सुकता व्यक्त की।

''यहाँ जो काम कर रहे हैं, सबको कुन्तल देश के मंत्री गंगाधर ने भेजा है। इनका सरदार

अन्य देशों की कहानियाँ पढ़ें hindi.chandamama.com पर

भद्र कुछ और आदमियों के साथ पहाड़ पर गया हुआ है। हम यहाँ पहाड़ के पेट में हैं। अगर महाकलि राक्षस का किला पाताल दुर्ग है, तो हमारा यह पर्वत गर्भ दुर्ग है।''

''उस दुष्ट को उसके दुर्ग के साथ नष्ट करने की पूरी व्यवस्था हो रही है।'' कालशम्बर मान्त्रिक ने कहा।

''भद्र, आपकी इस जगह तक बिना बाधा कैसे पहुँच सका?'' धूमक ने अत्यंत आश्चर्य होकर पूछा।

''यहाँ वह बड़े लम्बे रास्ते से आया। तुम नाना कष्ट झेलते, छोटे रास्ते से यहाँ पहुँचे हो। जैसे जंगल में विरूप आदि ने तुम्हारी मदद की है, वैसे ही किसी और ने उसकी मदद की थी।'' कालशम्बर ने कहा।

''मगर ये सब औषधियाँ क्या हैं बाबू?'' विरूप ने पूछा।

''राक्षसों के संहार के लिए इस्तेमाल होने वाले हथियारों में ये मुख्य हैं। तुम जंगली आदमी हो न? एक-एक पत्ते में एक-एक जड़ में कितनी शक्ति होती है, यह बात तुमसे छिपी हुई नहीं है।

धूमक भी उससे एक प्रश्न पूछना चाहता था। उसने मान्त्रिक से पूछा, ''महामान्त्रिक! राजकुमारी कान्तिसेना सकुशल तो है न?''

''सकुशल है, मन्त्री गंगाधर के पुत्र शशिकान्त का हाल क्यों नहीं पूछते हो? मैंने उसके घाव औषधियाँ लगा कर ठीक कर दिए हैं। परंतु जंगल के गाँवों में जब राक्षसों ने हमला किया, तो वह उनके हाथ में आ गया और मैं बच निकला। अब वह कान्तिसेना के साथ महाकलि राक्षस की कैद में है। कैद में वे दोनों आपस में खूब प्रेम कर रहे हैं। पर यह ऐसी बात है जो मुझे बिलकुल समझ में नहीं आती है।'' कहते हुए विरूप की ओर सिर मोड़ कर कालशम्बर मान्त्रिक ने आँखें बनाईं।

फिर बोला, ''यह समय प्रेम प्रदर्शन का नहीं। वह भी कैद में रहते हुए। मैं नहीं जानता था कि वह इतना गैर जिम्मेदार है। उसे कैद से मुक्त होने के उपाय करने चाहिए। मंत्री गंगाधर जितने बुद्धिमान एवं कर्तव्यनिष्ठ हैं उतना ही उनका पुत्र मनमानी करने वाला है। अगर मेरी बात मानी होती तो वह उस दिन राक्षसों के हाथों में न पड़ा होता। राक्षस अपने मानव कैदियों को गुलाम बना लेते हैं परंतु उन्होंने शशिकान्त को अब तक

रामायण की कहानियों के लिए आएँ hindi.chandamama.com पर

गुलाम नहीं बनाया है। यह चिंता का विषय है। आगे देखो क्या होता है?''

थोड़ी देर तक चुप्पी छाई रही। महाकलि को मारने के लिए मान्त्रिक ने क्या चाल चली थी धूमक को पता नहीं लग रहा था। उसकी दृष्टि में इसके लिए मात्र दो ही मार्ग थे। एक बड़ी सेना के साथ आकर उसे युद्ध में पराजित करना, दूसरा जैसे भी हो उसे अकेला करके, यथा शीघ्र मार देना।

धूमक यह सोच कर मान्त्रिक से कुछ पूछने ही वाला था कि सीढ़ियों पर से दो युवक भागे-भागे आए। दोनों ने जन्तुओं के चमड़े पहने हुए थे। उनकी कमर में तलवारें लटक रहीं थीं।

उन्होंने धूमक और उसके साथियों को इस तरह देखा जैसे पूछ रहे हों। ''ये कौन हैं?'' मान्त्रिक ने सिर नीचे करके कहा, ''भद्र, जो कुछ तुम कहना चाहते हो, कह दो। ये हमारे मित्र हैं। कदम्ब देश के रहने वाले हैं। ये राजकुमारी कान्तिसेना की रक्षा के लिए इतनी दूर आए हैं।''

''राजकुमारी की रक्षा तो राक्षस ही कर रहे हैं। हमें शशिकान्त की रक्षा करनी है। वे महाकलि राक्षस के पिता की सौवीं वर्षगाँठ के लिए तैयारी कर रहे हैं। कल दुपहर एक बजे वह शुरू होगी और शशिकान्त के शिरच्छेद की बलि के साथ समाप्त होगी।'' भद्र ने कहा।

''मैं जानता था ऐसा ही कुछ होगा। परंतु मैं ऐसा होने नहीं दूँगा। दुष्ट महाकलि अब अपने इरादों में कामयाब नहीं हो पाएगा। जब उसने मेरे पिता को मारा मैं अशक्त था लेकिन अब ऐसा नहीं है। मैं उसकी शक्ति की थाह ले चुका हूँ पर वह मेरी शक्ति नहीं जानता। मेरे पिता को जिस आसानी से महाकलि ने मारा है, उस आसानी से वह शशिकान्त को नहीं मार पाएगा। कल सूर्यास्त से पहले मैं सब राक्षसों का खात्मा कर दूँगा। मैं अपने पिता की हत्या का बदला लेकर रहूँगा। चलो मैं स्वयं देखूँगा कि वे लोग क्या करने की कोशिश कर रहे हैं।'' कहते हुए कालशम्बर ने पैर को ज़ोर से भूमि पर मारा और दाँत पीसता हुआ वह चल दिया।

पर्वत के पेट में कई गुप्त मार्गों से चलते हुए सब शिखर प्रान्त में पहुँचे। उस शिखर पर बड़े-बड़े वृक्ष थे। उन पर तरह-तरह की बेलें लिपटी हुई थीं। मान्त्रिक चुपचाप आगे गया और घनी बेलों को एक तरफ हटाकर उसने नीचे देखा।

hindi.chandamama.com पर जातक कथाओं का मज़ा लें

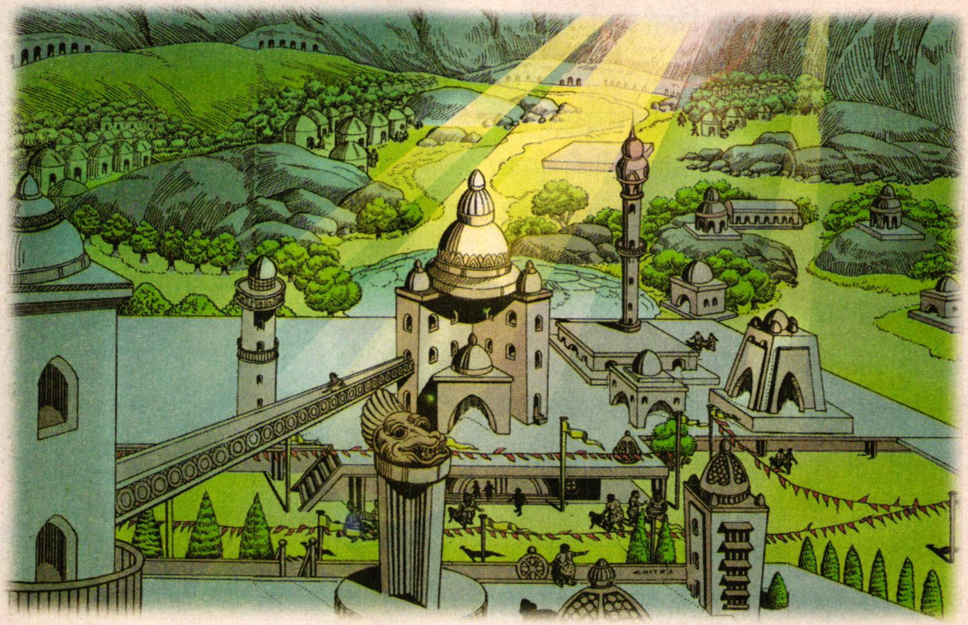

उसे पाताल दुर्ग और उसके अंदर के भवन उसके सामने के आँगन और मैदान...और वहाँ भोजन-वोजन, मनोरंजन के लिए जो व्यवस्था राक्षस कर रहे थे, उसने सब देखा।

कालशम्बर टकटकी बाँधे कुछ देर तक उस ओर देखता रहा। फिर उसने सिर मोड़ कर अपने साथियों को आने का इशारा किया। सब चुपचाप उसके पास गए। मान्त्रिक ने उन्हें पाताल दुर्ग दिखाया। उस किले पर सीधे सूर्य का प्रकाश नहीं पड़ रहा था, साँझ की सी मद्धम-मद्धम रोशनी वहाँ थी।

''तो यह है पाताल दुर्ग। क्या यहीं वह क्रूर महाकलि रहता है?'' धूमक ने पूछा।

''हाँ, पर कल सूर्यास्त तक वह और उसका किला मिट्टी में मिला दिए जाएँगे। मेरे पिता की आत्मा को शान्ति तभी मिल पाएगी। अब तक मैं इसी जिद में रहा कि मैं महाकलि को अकेला मार दूँगा। यह काम बड़े से बड़े मान्त्रिक के लिए भी संभव नहीं है, तन्त्र की आवश्यकता है। इस काम में भद्र ने मेरी बड़ी सहायता की है।'' कालशम्बर मान्त्रिक ने कहा।

उसके बाद सब वहाँ से वापस लौटे। मान्त्रिक आगे-आगे था। वे सब अब पहले रास्ते पर नहीं जा रहे थे। किसी और रास्ते पर जा रहे थे।

कुछ दूर चलने के बाद एक बड़े तने के पास पहुँचा और उसे मुट्ठी बाँध कर उसने दबाया।

पेड़ में इतना बड़ा खोल हो गया कि एक आदमी उसमें से बाहर जा सकता था। मान्त्रिक ने उस खोल में से उस तरफ देखा। धूमक आदि को उसने पास बुलाया। धूमक ने खोल में से

इन्द्र ने करम्भ का वध कैसे किया पढ़ें hindi.chandamama.com पर

चन्दामामा को अपनायें!

आप अपने न्यूज़पेपरवाले से चन्दामामा को नियमित रूप से देने के लिए अनुरोध करें। आप इसे आम न्यूज़-स्टैंड या प्रधान बुकशॉप से भी पा सकते हैं। चन्दा के लिए www.chandamama.com लॉग करें अथवा CSHOP 54646 को SMS भी कर सकते हैं।

देखा, तो वह घबरा गया। उसने ऐसे दृश्य की तो स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी। वहाँ एक बड़ा सरोवर था। उसके तट पर पेड़ के नीचे कुम्भीर बैठा था। उसके कुछ दूरी पर राजकुमारी कान्तिसेना कुछ भील स्त्रियों के साथ सरोवर के तट पर टहल रही थी।

''कान्तिसेना, कान्तिसेना!'' धूमक ने चिल्लाना चाहा। पर संभल गया। उसने कालशम्बर की ओर मुड़ कर पूछा, राजकुमारी सकुशल तो है। पेड़ के नीचे जो बैठा है वह कुम्भीर है, वह वही है न, जो राजकुमारी को राजमहल से उठा लाया था? राजकुमारी के साथ जो स्त्री है वह कौन है?''

''वह भीलों के नायक पुलिन्द की दसवीं जवान पत्नी है। इसमें कोई संदेह नहीं है।'' विरूप ने कहा। ''यह तो वास्तव में बहुत सुन्दर है। अगर रंग और गोरा होता तो कान्ति सेना के समान राजकुमारी लगती। तभी पुलिंद इसके लिए इतना बेचैन था।'' सोमक ने हँसते हुए कहा।

''पुलिन्द की पत्नी। यह तो मैं नहीं जानता परंतु वह तो कह रही थी कि वह कन्या है और महाकलि राक्षस कान्तिसेना के साथ-साथ मुझसे भी विवाह करने जा रहा है। वह सबसे कहती फिर रही है कि वह पाताल दुर्ग की महारानी है।'' कालशम्बर मान्त्रिक ने कहा।

धूमक ने इस विषय में कुछ कहना चाहा। पर इससे पहले कि वह कुछ कह सका कुम्भीर एक क्षण चारों ओर देख कर तुरंत उठा और खड़े होकर पत्थर की गदा को सिर पर रख कर पेड़ के तने की ओर लंबे-लंबे डग रखता हुआ चल पड़ा।

(और है)

इन्द्र ने करम्भ का वध कैसे किया पढ़ें hindi.chandamama.com पर

युद्ध की सभा

(अन्य सभी उसके आगे विनम्रता से झुक गए। मैंने भी थोड़ा झुकना शुरू किया लेकिन उसने मुझे रोक दिया। ''प्रार्थना हेतु मानवता के लिए अब बहुत देर हो चुकी है,'' उसने कहा और मुस्कुराई। प्रकाश की एक चमक आसमान में कौंध गई। एक शिकार हुए हिरन की तरह डर मेरी आँतों में तेज़ी से दौड़ने लगा।)

जैसे ही मैंने उसकी स्वप्निल मौत जैसी आँखों में देखा, मुझे लगा मैं चेतना शून्य हो रहा हूँ। मयूरी की बाँहें आसमान में, एक शांत वृक्ष की शाखाओं की तरह लहरा रही थीं और मैं किसी प्रकार यह जानता था कि उसके संयत चेहरे के पीछे क्रोध छिपा हुआ है। एक इतना पुराना क्रोध जिसमें जो कुछ उसने अपने सामने देखा, उसे निर्मूल कर देने की धमकी थी।

''मुझे दुख है,'' मैंने हकलाती आवाज़ में कहा। मैं नहीं जानता था कि मैं किसलिए क्षमा माँग रहा हूँ, लेकिन मैं भारी अपराध बोध से छुटकारा न पा सका जिसने मुझे बोझ तले दबाया हुआ था।

''मुझे दुख है कि तुम्हें यहाँ आना ही पड़ा था।'' वह फुसफुसाई। उसकी आवाज़ मेरी रीढ़ की हड्डी पर ऊपर तक रेंग गई। आसमान अब पैशाचिक लाल रंग का हो चुका था, डूबते हुए सूरज के रक्त की आखिरी बूँदें टपक रही थीं। जल्दी ही धीरे से रात आ जाएगी और अँधेरा मेरी शर्मिंदगी के अहसास को छिपा लेगा।

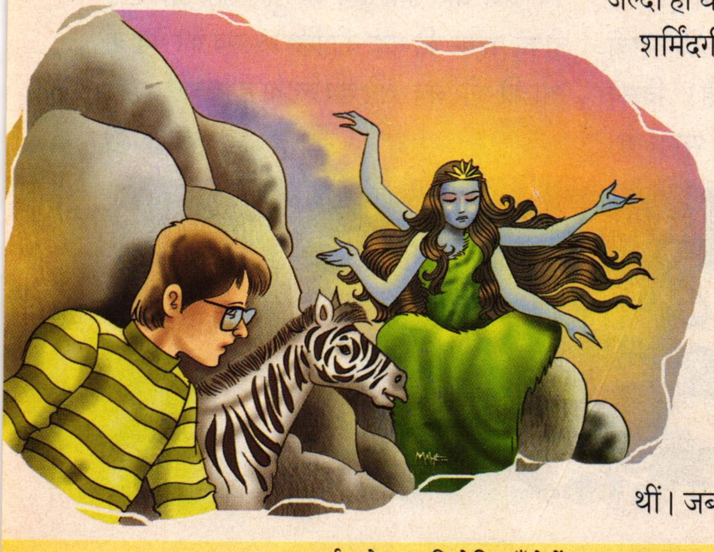

''वह मात्र एक लड़का है, यह याद रखो,'' ग्वावा ने कहा। मयूरी धीरे से उसकी ओर मुड़ी और बोली, ''लेकिन वह बड़ा हो जाएगा। और वह उनमें से एक बन जाएगा। कोई एक जो धरती पर अधिकार करता है, जानवरों और पक्षियों को नाम देता है। और कोई एक जो मुझे देख कर झेंप जाएगा।''

डाइनसॉर बहनें डर से काँप रही थीं। जबकि, चाइनीज़ हाथी मयूरी पर प्रेम-

कई मज़ेदार प्रतियोगिताएँ देखें hindi.chandamama.com पर

पूर्वक मुस्कुरा रहा था। "ऐसा चरित्र! ऐसी गंभीरता!" उसने ऐलान किया। "उतना काफी है, तुमको धन्यवाद!" मयूरी ने निष्ठुरता से नहीं कहा। उसने दुबारा मेरी ओर ध्यान दिया, "तुम कितने बड़े हो लड़के?" "पंद्रह।" "तब तो तकरीबन आदमी हो," वह बोली।

तुमने वादा किया था। तुमने कहा कि उनसे तुम इसकी रक्षा करोगी," ग्वावा ने कहा। मैंने उसे कृतज्ञतापूर्ण नज़रों से देखा। "वह नुकसानदेह नहीं है, हमारा विश्वास करो। सभी इन्सान दुष्ट नहीं होते, भूलो मत कि तुम भी कभी इन्सान थीं!" लेमन ने विनती की।

मयूरी के चेहरे पर क्रोध की एक झलक कौंध हुई। "मैं कभी इन्सान नहीं थी। न आज, न कल। तुम यह नहीं भूलो।" लेमन तुरन्त शांत हो गई। होनेवाला झगड़ों के दबाव से हवा में तनाव था। आखिर में उसने कहा, "मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी।" "इसलिए नहीं कि मुझे कहा गया बल्कि इसलिए कि बदला ही इन्सान है और मैं इसका हिस्सा नहीं लेना चाहती।"

मैं सुकून में नहा गया। मैं कृतज्ञता से नीचे झुका। मैं अनुनिर्वा में मयूरी की शक्ति सीमा नहीं जानता था लेकिन अगर वहाँ कोई रानी थी तो वही थी। "ऐसी अदा!" चाइनीज़ हाथी ने सीटी बजाई। वह बेनामी धमकियों से, चमगादड़ों की तरह हवा में सुरक्षित, पूरी तरह निश्चिंत दिखाई दे रहा था।

"तुम मेरे साथ युद्ध की सभा में आओगे। वहाँ जो भी बहस होती हो तुम एक भी शब्द नहीं बोलोगे। तुम्हारे पैदा होने से बहुत पहले ही तुम्हारा विनाश तारों में लिखा जा चुका था। जो समय चुना गया था अब उसे बदल पाना कठिन है। जो घड़ियाँ, पल घंटे बीत चुके हैं उन्हें बदल पाना दुष्कर है। लेकिन मैं कोशिश करूँगी।" जैसे ही शब्द मूयरी के मुँह से निकले उसके आस-पास की हवा थोड़ा सुकून में दिखी।

रक्तिम सूर्य गायब हो चुका था। पीला चाँद एक घने बादल के पीछे से झाँक रहा था। डरा हुआ जैसे कि अनुनिर्वा के चेहरे को सीधा देखने में उसे डर में लगता हो।

मयूरी घूमी और पहाड़ों की ओर चलने लगी। बाकी सब वहीं ठहर गए जहाँ थे। मैं हिचकिचाते हुए साथ चलने के लिए लगभग दौड़ते हुए उसके पीछे चल दिया। बालू को पार करते समय स्वयं को मजबूरन बहुत छोटा महसूस कर रहा था। घास का हर तिनका, रेत का हर कण सब कुछ विशाल और सजीव दिख रहा था। मैं स्वयं को भूभाग पर घुसपैठिया जैसा महसूस कर रहा था और धरती

चन्दामामा के वीरों के बारे में जानें hindi.chandamama.com

से जुड़ने की एक प्रबल इच्छा मेरे हृदय के तारों में अटक गई।

जब हम पर्वत की पादगिरि तक पहुँचे, मयूरी ने मेरी ओर देखा और कहा, ''मेरे शब्द याद रखना। बोलना नहीं।'' मैंने सर हिलाया। अचानक मैंने दादाजी और लड्डू के बारे में सोचा। बहुत दूर जलपरियों की गिरफ्त में।

''कुछ है जो तुम्हें जानना है'' मैं शुरू हुआ। उसने मेरी ओर अपेक्षा से देखा, अधीरता की हल्की सी झलक उसकी आँखों में झिलमिलाई। ''मेरे दादाजी और लड्डू यहीं हैं जल परियों के साथ। जब यहाँ सब कुछ... ठीक ठाक हो जाता है तो मुझे उन्हें यहाँ ले आना चाहिए,'' मैं बिना

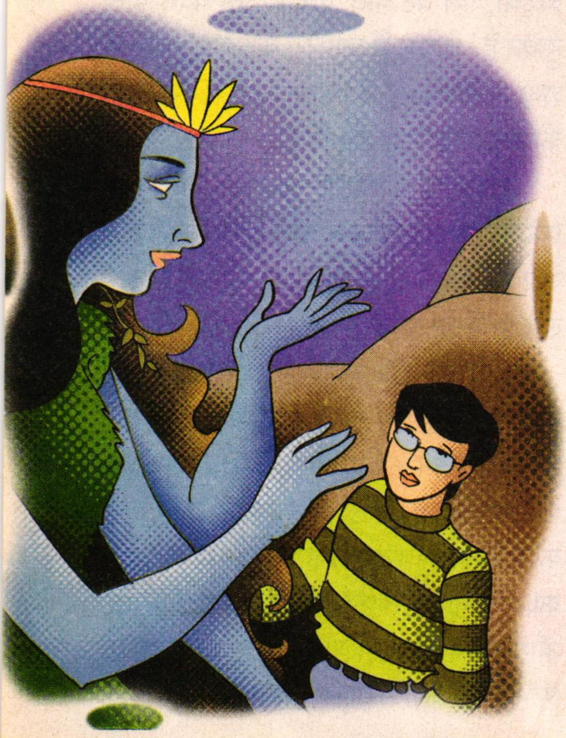

सोचे समझे बोल उठा। ''तुम मुझसे पूछ रहे हो या तुम मुझे बता रहे हो?'' मयूरी की धीमी आवाज़ रात की हवा में फुसफुसाई। ''मैं नहीं जानता, मैं उन्हें नहीं छोड़ सकता। बस मैं ये जानता हूँ,'' मैंने घबराते हुए कहा। ''मैं समझती हूँ, दो इन्सान और एक कुत्ता एक इन्सान से अधिक बुरे नहीं हो सकते,'' उसने थोडी व्यंग्यपूर्ण आवाज़ में कहा। ''उनकी चिंता करना छोड़ो लड़के। जलपरियाँ प्राचीनकाल से एक सम्मानित प्रजाति है। वे पूरा इन्सान बनना पसंद करेंगे बजाय इसके कि अपने वादे से मुकर जाएँ।''

''तुम इन्सानों से इतना घृणा क्यों करती हो?'' इससे पहले कि मैं स्वयं को रोक पाता प्रश्न मेरे मुँह से फूट पड़ा। ''क्योंकि कुछ ज़ख्म लगते हैं और कुछ दुबारा हरे होते हैं और एक दिन आपको समझ में आता है कि आपके पास कुल मिला कर सब ज़ख्म हैं। और फिर आप उम्मीद करते हैं कि आप अजन्मे ही होते।'' यह कहते हुए वह दुखी थी। मैं यह देख सकता था। उसके बालों में उसकी वेदना दिखाई-सी पड़ी। लेकिन तभी उसने ऊपर देखा और मुस्कुराई। ''चलो अब बातों में और अधिक समट नष्ट नहीं करना है। युद्ध की सभा हमारी प्रतीक्षा में है।''

हमने पहाड़ी पर चढ़ाई आरंभ की। धरातल बहुत ही ऊबड़-खाबड़ था। चाँद के नीचे बड़ी-बड़ी शिलाएं खूब चमक रही थीं। हमारे रास्ते पर शांति से पड़ी मोटी अंगूर बेलों में मैं उलझ गया। मयूरी नहीं रुकी। मैंने अपनी कुहनी से जीन्स तक बह कर आए खून के रिसाव को पोंछा। मेरे पास

नए संग्रह अच्छे हैं? ARCHIVES <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर SMS करें

रुकने का समय नहीं था। उसका साथ देने के लिए मुझे चलते जाना था। आसपास की खिसकती और उभरती अजीब आकृतियों को देखना छोड़ दिया। "एकाग्र करो, एकाग्रता से तुम शत-प्रतिशत अर्जित कर पाओगे!" मैंने अपने गणित के शिक्षक को याद करते हुए स्वयं से कहा। हम उन्हें अक्सर चान्दिल कह कर पुकारते थे क्योंकि वे गंजे थे। मैंने अपनी हँसी को दबा दी।

शिखर पर पहुँच मैं अपनी नीचे अनुनिर्वा को पूरी तरह देख सकता था। चाँद बादलों के पीछे बहुत देर तक छिपा न रह सका। दबी हुई सफेद रोशनी धरती पर एक चादर की भाँति बिखर गई। और मुझे अपनी बाँह में झुरझुरी सी महसूस हुई, हवा मुझे सोए हुए जानवरों के सपनों में ले आई। संपूर्ण शांति में, मैं ज़िंदगी अपने चारों तरफ धड़कती हुई महसूस कर सकता था। "मयूरी," मैंने कहा। "वहाँ युद्ध की सभा में कौन-कौन हैं?"

"तुम जल्दी ही खुद देख लोगे," उसने कहा। उसने अपने चाएँ हाथ चाँद की तरफ आगे बढ़ाए और अपनी आँखें बंद कर लीं। मुझे लगा जैसे वह प्रार्थना कर रही है लेकिन मैंने एक शब्द भी कहने की हिमाकत नहीं की।

जब उसने आँखे खोलीं उसके चेहरे पर शांति का भाव था। हमने अपनी यात्रा नीचे की तरफ शुरू की। एक या दो बार, मुझे लगा मैंने झाड़ियों में चमकती आँखों को देखा। लेकिन वे इतनी जल्दी गायब हो गयीं कि मैं निश्चय ही नहीं कर पाया कि वे वास्तव में थीं या मात्र मेरी कल्पना थी। जब हम

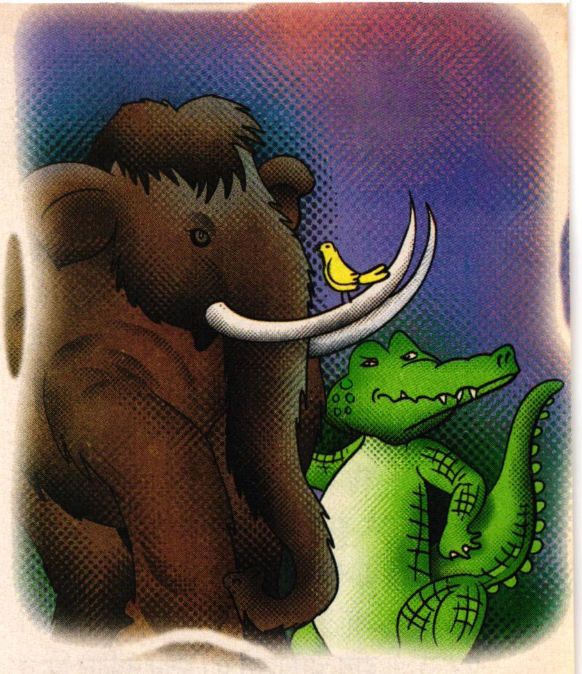

पहाड़ी की तलहटी में पहुँचे तो मैंने रात के अँधेरे में मिट्टी का एक विशाल टीला देखा। मैं यह जान ही नहीं पाया कि वह वास्तव में क्या है। मैं पूछने के लिए मयूरी की तरफ मुड़ा, लेकिन वह सीधे सामने देख रही थी।

मैं तेज़ी से उत्सुकता में टीले की तरफ बढ़ा-क्या यह दूसरी पहाड़ी थी जिसे हमें पार करना था? और मुझे झटका लगा, मैं किसी ठंडी और परतदार चीज़ पर चढ़ गया था और सर के बल गिर पड़ा। उठा और दौड़ने को हुआ लेकिन मयूरी हँसी और मुझसे जहाँ हूँ वहीं ठहरने को कहा।

"नील मगरमच्छ से मिलो," उसने कहा। मैंने "उस किसी चीज़" पर नीचे की ओर नज़र डाली जिस पर मैं चढ़ गया था और घबराहट से मेरा दिल अपने कदमों पर आ गिरा। "विशाल" शब्द उसके लिए काफी नहीं था। न ही "भीमकाय" था। वह

नए संग्रह अच्छे हैं? ARCHIVES <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर SMS करें

तकरीबन १६ फीट लंबा था और उसके जबड़े चाय-पार्टी की मेज़बानी करने के लिए काफी बड़े थे। 'हैलो। मैं एक नरभक्षी हुआ करता था,'' मगरमच्छ ने मुझसे मैत्रीपूर्ण लहज़े में कहा।

मैं घबराते हुए हँसा। ''कभी भी एक मगर-मच्छ पर मत हँसो,'' उसने कहा और आँख मारी। कौन से शालीनतापूर्ण व्यवहार मुझे अपनाने चाहिए यह मुझे नहीं मालूम था इसलिए मैंने उसे अवाक्-सा घूरा। तब मयूरी बोली, ''यहाँ और भी हैं, लड़के। क्या तुम्हारी आँखें देख नहीं सकतीं?'' वह दुबारा टीले की ओर देख रही थी और मैं धीरे से उसकी ओर गया। और तब मैंने उन्हें देखा। एक जोड़ी दाँत चमक रहे थे। इतने नुकीले कि वे एक इमारत के भी आर-पार जा सकते थे मानो कि वह एक तरबूज़ हो।

''बालों वाला भीमकाय हाथी,'' एक मधुर स्पष्ट आवाज़ ने कहा और मुझे लगा कि यह टीला बोल रहा है। वास्तव में, उसने औपचारिकता से अपना परिचय देते हुए कहा।

छोटा पीला गौरैया की तरह का पक्षी भीमकाय हाथी के विशाल सिर पर बैठ गया। वह एकाएक नीचे झूल गया और मयूरी की फैली हुई हथेली पर आकर बैठ गया। ''यह युद्ध की सभा है,'' मयूरी ने घोषणा की। ''या तकरीबन सभी, खैर छोड़ो। सिन्धु नदी की डॉल्फिन यहाँ न आ सकी क्योंकि यह पानी में होने वाली सभा नहीं है।''

''तुम अपना मुकदमा स्वयं लड़ने आए हो।'' पक्षी ने कहा। ''सभा ने तुम्हारी जाति के कारनामों को धिक्कारते हुए वर्षों पहले एक प्रस्ताव पारित किया था। तब यह निर्णय लिया गया था कि अगर तुम अनुनिर्वा में प्रवेश करोगे तो हम तुम्हें माफ नहीं करेंगे।''

नील मगरमच्छ ने कहा, ''वार्ब्लर सही है। हमारे संग्रहकर्ता, जो तुम्हें धरती पर लाने करने गए थे, तुम्हारे प्रति सहृदय थे। उन्होंने मयूरी, एकाकी को, मना लिया...'' और यहाँ वह रुका और अपनी विशाल पूँछ उठाई और एक सम्मान के तौर पर उसे ज़मीन पर मारा, ''...बिना किसी हानि के तुम्हें अनुनिर्वा में रहने की अनुमति देने के लिए।'' बालों वाला विशाल हाथी आगे आया और बोला, ''सच तो यह है कि तुम्हें हमारे न्याय के कमरे में होना चाहिए। लेकिन हम तुम्हें पहले देखना चाहते हैं कि वहाँ ले जाने के लिए हम तुम

यक्ष पर्वत की कहानियाँ पढ़ें hindi.chandamama.com पर

पर विश्वास कर सकते हैं कि नहीं। विश्वास वह चीज़ है जिसे तुम्हें अर्जित करना होगा।''

मैंने बोलने के लिए मुँह खोला, लेकिन मयूरी ने एक नज़र मुझ पर फेंकी और मुझे उसकी चेतावनी याद आ गई। मैंने अपने पैर बेचैनी से सिकोड़ लिए और कुछ न कहा। ''लड़का मेरे निमंत्रण पर यहाँ आया है,'' मयूरी ने कोमलता से कहा। ''यह सच है कि इसकी प्रजाति हत्यारा है। अगर वे किसी भूमि पर शरण लेंगे तो उनके हाथों का खून चमक कर जल उठेगा। उनका इतनी उत्सुकता से धरती के विनाश में सहायक होने का अपराध बहुत गंभीर है।''

वह रुकी। मैं नहीं जानता था कि इसका क्या मतलब है। लेमन और ओमेन निश्चित थे कि मयूरी सहायता करेगी, क्योंकि वह हमारी सुरक्षा के लिए उनकी बातों से सहमत हो गई थी। लेकिन मुझे और अधिक विश्वास नहीं था। उसका हमारी जाति के लिए गुस्सा, सभा में अन्य जीवों से अधिक दिखाई दे रहा था।

''और उन अपराधों के लिए क्या इस अकेले लड़के पर मुकदमा की जानी चाहिए? उसके साथ एक बूढ़ा आदमी, जिसे यह दादाजी कहता है, और एक कुत्ता भी है...''

''तुम मेरे दादाजी को कुछ नहीं करोगे!'' मैं अपने आप को भूल कर गिड़गिड़ाया।

''देखो यह कैसे अपनी शर्तें रखता है!'' नील मगरमच्छ फुसफुसाया। उसके दाँतों में चाँदनी मानों उलझ गई हो। उसकी आँखों ने मुझे देखा जैसे कि वे मेरे आर पार हो जायेंगी। मैंने उसके

मज़बूत जबड़ों की ओर देखा और भय मेरे पेट में रेंग गया। ''तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई एकाकी से ऐसे बात करने की! बिना सम्मान के!'' बालों वाले भीमकाय हाथी ने एक सीटी से झाड़ा।

वार्ब्लर मयूरी के हाथ से उड़ी और दुखी होकर एक चट्टान पर बैठ गई। ''इसका कोई उपयोग नहीं,'' मैंने कहा। मैंने कहा ''अब इसका कोई उपयोग नहीं है। और क्या इसका कोई उपयोग है?''

''मेरा मतलब यह न था...'' मैं बड़बड़ाया मैं औरों के क्रोध से अधिक मयूरी के शान्त भाव से डरा हुआ था। जैसे भी हो, उसके मुस्कुराते होंठों ने मेरा भाग्य लिख दिया था। मैं समझ गया, वह इसका आनंद ले रही थी। उसका मुझे बचाने का कभी भी इरादा न था। मैं मरने जा रहा था।

(आगे है) - सौम्या राजेन्द्रन

बीरबल की कहानियों का आनन्द लें hindi.chandamama.com पर

भारतीय बेसबॉल संगठन (बी एफ आई)

क्या आप एक गेंद फेंकने, बल्ला घुमाने, रन बनाने, या मैदान पर बॉल लपकने वाला बनने में रुचि रखते हैं? यह क्रिकेट नहीं है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं! बेसबॉल, एक प्रसिद्ध अमरीकी प्रतीक, जिसकी भारत में अभी शुरुआत हुई है। एक ऐसा खेल जो क्रिकेट के समान है। उसे ऐसे देश में निश्चित ही एक बड़ी मात्रा में दर्शक मिलेंगे जहाँ हर आने जाने वाले का स्वागत होता है। बी एफ आई ने क्रिकेट की भाँति बेसबॉल को भारत में लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से एक पहल की है!

भारतीय बेसबॉल संगठन (बी एफ आई) की नींव दीपक जोशी द्वारा २००६ में रखी गई। उन्होंने इस खेल को भारत में प्रोत्साहित करने के लिए चण्डीगढ़ में पहली बेसबॉल अकादमी की स्थापना की। खेल हमेशा से ही दीपक जोशी का शौक रहा है। उन्होंने अपने सपनों के भारत में खेलों को सर्वसुलभ बनाकर उसे एक खेलों के केन्द्र के रूप में अनूदित किया जहाँ भारतीय परिप्रेक्ष्य में बेसबॉल और रग्बी जैसे खेलों के लिए एक पहल अभी बाकी है। बी एफ आई को स्थापित करने का उद्देश्य है बच्चों की बेसबॉल खेल में रुचि लेने के लिए प्रेरित करना तथा उत्साह बढ़ाना और जो बेसबॉल के व्यावसायिक खिलाड़ी बनने के इच्छुक हैं उनको प्रेरणा देना।

डब्ल्यू बी एफ आई (भारतीय महिला बेसबॉल संगठन) महत्वाकांक्षी बी एफ आई का दूसरा प्रयास है जो लड़कियों को खेल से अवगत कराने तथा महिलाओं के कौशल स्तर बढ़ाने के उद्देश्य से शुरू हुआ। यह भारत में अपनी तरह का पहला और एकमात्र संगठन है जो प्रशिक्षणार्थियों के लिए विश्व-स्तरीय प्रशिक्षकों द्वारा विशिष्ट प्रशिक्षण एवं खिलाड़ी मुहैया कराता है। डब्ल्यू बी एफ आई एक वैश्विक मंच उपलब्ध कराने हेतु हर उस महिला की आकांक्षा पूर्ण करने के लिए दृढ़ संकल्प है जो खेल को अपना व्यवसाय चुनना चाहती है और सर्वोच्च बेसबॉल खिलाड़ियों के बीच अपना एक मुकाम बनाना चाहती है।

खाने में ऑक्टोपस? और मज़ेदार कहनियाँ hindi.chandamama.com पर

बी एफ आई ने मोहाली एवं चण्डीगढ़ में एक विश्व-स्तरीय अंतर्राष्ट्रीय बेसबॉल स्टेडियम के निर्माण के लिए नींव रखी है जिससे खेल सीखने वाले ज़िंदादिल बच्चों को निर्देशन एवं प्रशिक्षण दिया जा सके। यह कुछ और जगहों जैसे दिल्ली और पटियाला में भी कार्यरत है।

बेसबॉल के खेल उपकरण छात्रों को उचित दामों पर उपलब्ध कराए जाते हैं। योग्य खिलाड़ियों के लिए शिक्षानुदान कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। अंतर्राष्ट्रीय बेसबॉल प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व करनेवाली टीमों का चुनाव करने के लिए वर्ष में दो बार शिविर और चिकित्सालय का आयोजन किया जाता है। जो फीस नहीं भर सकते उन योग्य खिलाड़ियों को मुफ्त प्रशिक्षण दिया जाता है। इच्छुक व्यक्तियों के लिए सप्ताहांत में मुफ्त में प्रशिक्षण कक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। डब्ल्यू बी एफ आई की प्रेसीडेण्ट, मिस रोसू ब्रार कहती हैं, ''हमारे साथ २०००० खिलाड़ियों तथा ५० प्रशिक्षकों का सक्रिय योगदान है। ये कक्षाएँ विभिन्न आयु वर्ग तथा खेल के बारे में इच्छुक व्यक्ति की जानकारी को ध्यान में रखते हुए निश्चित की जाती हैं।''

इस प्रकार बी एफ आई उम्मीदवार छात्रों में क्या देखती है? रोसू ब्रार कहती हैं कि बी एफ आई उन सब का स्वागत करती है ''जो बेसबॉल में रुचि रखता है और इसे खेलना चाहता है!''

नवीन योग्यताओं के प्रशिक्षकों को कार्य पर रखने से पूर्व बी एफ आई उनमें प्रतिबद्धता की दृढ़ अनुभूति का निरीक्षण करती है। प्रशिक्षक को खेल संबंधी संपूर्ण ज्ञान होना चाहिए और सबसे महत्वपूर्ण है बाल मनोविज्ञान के ज्ञान की आवश्यकता, क्योंकि, एक सही मायने में योग्यता हासिल करने के लिए प्रशिक्षक-छात्र के बीच अच्छे संबंध बहुत ज़रूरी हैं।

बेसबॉल क्रिकेट के उतना ही समान है जितना कि उससे भिन्न है। कौन जाने कि जल्दी ही भारत में बेसबॉल का एक सर्वोत्तम संघ बन जाए। अगर तुम दस्ताने पहनने के लिए तैयार हो, कहीं मत देखो... बी एफ आई के संपर्क में आओ!

मिलने का पता :

भारतीय बेसबॉल संगठन (बी एफ आई)
एस सी ओ-५२-५३, सेक्टर ९ डी,
पहली मंज़िल, चण्डीगढ़
फोन नंबर : 0172 4676618
ई-मेल : info@baseballindia.net
वेब साईट : www.baseballindia.net

मज़ेदार चुटकुलों के लिए आइए hindi.chandamama.com

उदीयमान सितारा

उपलब्धियाँ:

- मॉरिशस ओपन जूनियर सिंगल्स विजेता (२००९)
- कोचि नेशनल रैंकिंग टूर्नामेंट यू-१९ विजेता (२००८)
- सब जूनियर नेशनल्स, देहरादून कांस्य पदक विजेता (२००७)
- कृष्णा कैतान रैंकिंग टूर्नामेंट यू-१६, चेन्नई बॉयज़ सिंग्लस् विजेता (२००७)
- विद्यालय खेल यू-१४, सूरत विजेता (२००५)
- नेशनल रैंकिंग टूर्नामेंट यू-१३, चेन्नई बॉयज़ सिंगल्स विजेता (२००४).

हीरक ज्योति नियोग

असम के १७ वर्षीय चैंपियन हीरक ज्योति नियोग के पास अपने मन पसंद विषय-बैडमिंटन के बारे में हमसे कहने के लिए बहुत कुछ है। कृष्णा देकराजा, हीरक का चचेरा भाई और एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर का खिलाड़ी, से ही इस खेल को चुनने के लिए उत्साहित हीरक को प्रेरणा मिली।

हीरक रोज़ ५ घंटे अभ्यास करता है और अपने स्वास्थ्य व्यवस्था का कठोरता से पालन करता है क्योंकि उसे विश्वास है कि खेल के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण है। वह अपने कोच सुब्रतो पाथ्य का बहुत सम्मान करता है। हीरक कहता है, ''मुझे अपने कोच की जो बात सबसे अच्छी लगती है, वह है उनका पेशे के प्रति समर्पण और मुझमें उनका विश्वास!'' अब बारहवीं कक्षा में पढ़ने वाला हीरक बैडमिंटन और अपनी शिक्षा दोनों में ही अच्छा कार्य करने की कोशिश करता है। खेल से न केवल वह बैडमिंटन खेलने के लिए प्रोत्साहित होता है बल्कि दबावों से मुकाबला करने के लिए निर्देशन भी मिलता है। ''मैं अपने माता-पिता एवं गुरुजनों का शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने मुझे अपनी भावनाओं को सही रास्ते पर रखने के काबिल बनाया,'' हीरक टिप्पणी करते हुए कहता है। वह एअर इंडिया की भारतीय टीम के प्रतिनिधित्व करने हेतु चुने जाने पर बेहद प्रसन्न है।

हीरक आगामी वर्षों में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए बहुत ही उत्साहित है और पेशेवर बैडमिंटन खिलाड़ी बनने की महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए पुल्लेला गोपी चंद अकादमी में शामिल होना उसकी अगली योजना है।

नए चुटकुले पढ़ें hindi.chandamama.com पर

एक विश्वास भरी कूद!

बंजी जंपिन्ग- एक अतिरेक खेल जो अत्याधिक आवेग उत्पन्न करता है, जिसकी जड़ें ज़मीन में एक जोखिम भरा गोता लगाने (ऊँचे स्थान से कूद कर ज़मीन में गड़ जाना) जैसे वानुआटू के पुरुषों द्वारा परंपरा के रूप में खेले जाने वाले खेल से निकली हैं।

एक नौजवान युवक उस मौसम की एक बड़ी शानदार शकरकन्द की फसल के लिए किस सीमा तक जाएगा? वह वास्तव में केवल लताओं में बँधकर १०० फीट की ऊँचाई से गोता लगाना पसंद करेगा। वानुआटू एक दक्षिण प्रशान्तीय द्वीप है जहाँ यह भूमि गोताखोरी (जिसे यहाँ के लोग-''नाघोल'' कहते है) जैसी मृत्यु-को चुनौती देनेवाली परंपरा आज भी आमतौर पर अप्रैल के शुरू में नवयुवकों द्वारा संपन्न की जाती है।

समारोह से पहले, कूद लगाने हेतु प्रतियोगियों के लिए ताज़े कटे बाँस और लकड़ी की तकरीबन एक सौ फीट ऊँची, सीधी खड़ी मीनार के ऊपर शानदार मंच तैयार किया जाता है! कूद के लिए इस्तेमाल की जाने वाली रस्सियाँ लताएँ होती हैं। गोताख़ोर केवल अपनी एड़ियों मे लताएँ बाँध कर मीनार पर से कूदते हैं। ध्यान रहे जाल नहीं, जीवन रक्षक पेटियाँ नहीं और न ही नर्म प्रभाव हेतु पानी! द्वीप वासियों का विश्वास है कि जैसे ही पुरुष के बाल ज़मीन को नरमाई से सँवारते हैं, मिट्टी की उर्वरा शक्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है और उस वर्ष निश्चित रूप से शकरकन्द की एक बढ़िया फसल होती है।

आधुनिक प्रकार की बंजी जंपिन्ग १९७९ में शुरू हुई। अप्रैल फूल के दिन (१ अप्रैल) डैन्जरस स्पोर्टस् क्लब के डेविड किर्के और तीन अन्य रोमांच के इच्छुक सदस्यों ने ब्रिस्ट्ल के क्लिफ्टन सस्पैंशन ब्रिज (इंगलैन्ड) से एक बंजी कूद लगाई। वे लोग पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए और उन पर १०० पौण्ड का दंड लगाया गया, परंतु वे रातों रात मशहूर हो गए!

मैच बारिश में धुल गया? आइये hindi.chandamama.com पर

समाचार झलक

Images Courtesy: wikimedia commons

संगीत की ताकत

जब हम संगीत सुनते हैं यह हमारी कोशिकाओं को पुनर्जीवित करता है और हमें शक्ति देता है। हाल ही में हुए अध्ययन दिखाते हैं कि संगीत समय से पूर्व जन्मे शिशुओं को दर्द से जूझने, अच्छी तरह भोजन ग्रहण करने और आसानी से शान्त होने में भी मदद करता है। समय से पूर्व जन्मे शिशुओं को कई प्रकार की तकलीफदेह प्रक्रियाओं से गुज़रना पड़ता है जैसे रक्त के नमूने हेतु एड़ी पर चुभन और दर्दनाक उपचार। कनाडा के अनुसंधानकर्ता के अनुसंधानों के अनुसार, अगर इन नवजातों या अपरिपक्वों को संगीत सुनाया जाए तो यह उन प्रक्रियाओं के दौरान होने वाले दर्द को कम करने में सहायक होता है। साथ ही अन्य लाभ भी पहुँचाता है।

इनकैन्डिसेन्ट लाइट बल्ब पर रोक

यूरोप में १०० वाट के इनकैन्डिसेन्ट लाइट बल्ब और तुषारित बल्बों के उत्पादन पर अभी हाल ही में रोक लगा दी गई है। इन सभी बल्बों के उत्पादन पर रोक इनकैन्डिसेन्ट लाइट बल्ब का हैलोजिन या अन्य ऊर्जा-दक्ष बल्ब में परिवर्तन हेतु लगातार होनेवाली प्रक्रिया की ओर पहला कदम है। यह कार्य अगले तीन वर्ष में जाकर पूरा होगा। सबसे आखिर में २०१२ में न्यूनतम वाट के बल्ब प्रतिबाधित होने हैं। सरकार ने धीमे-धीमे इनकैन्डिसेन्ट लाइट बल्ब हटाने के मानदण्ड अनुमोदित कर दिए हैं। कुछ कानूनी अधिकारों के अंतर्गत यह कानून निर्माण द्वारा किया जा चुका है जब कि कुछ जगहों में यह स्वैच्छिक मानदण्डों द्वारा किया गया है। इसका उद्देश्य ऊर्जा दक्ष प्रकाश के विकल्पों जैसे कॉम्पैक्ट प्लोरेसेन्ट लैम्प (सी एफ एलस्) और एलईडी लैम्पस् के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहन देना है।

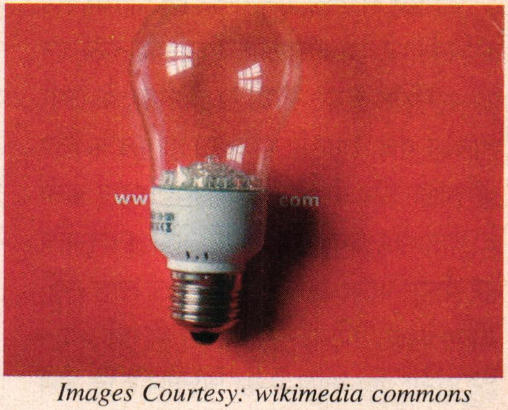

Images Courtesy: wikimedia commons

फ़ोन जो आप पहन सकते हैं? और जानें hindi.chandamama.com पर

दयालु ईश्वर की संतान

बादशाह अकबर बीरबल के साथ यमुना तट पर चहलकदमी कर रहे थे कि पास के मंदिर की घंटियों की तेज़ आवाज़ सुनाई दी।

''ये घंटियों की आवाज़ क्या बताती है?'' बादशाह ने व्यंग्य से पूछा।

''बजती हुई घंटियों की आवाज़ हमें बताती है कि हम सबसे दयालु ईश्वर की संतान हैं, वह हम सभी पर नज़र रखता है तथा जब भी हम उसे मदद के लिए पुकारते हैं तुरत दौड़ पड़ता है,'' बीरबल ने उत्तर दिया।

''अह! ईश्वर पुत्र!'' बादशाह ने बीरबल की टाँग खींची और हँसा।

''यह हँसने की बात नहीं है, आलमपनाह,'' बीरबल ने कहा।

''ठीक है, मैं सोचता हूँ कि ईश्वर के पास हर भक्त की गुहार-पुकार सुनने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए हैं। एक भक्त उसकी प्रार्थना करता है और वह धरती पर उतरता है, भक्त को हैरान परेशान करने वाले दुश्मन के पीछे जाता है, बुरे इंसान को मारता है और भक्त उसे उसी नाम से बुलाता है। क्यों ऐसा ही कुछ है न जिससे भगवान विष्णु के दस नाम हैं? हर अवतार के लिए एक नाम तुम लोगों से ही मिला दिखता है।'' बादशाह हँसते हुए दुहरा हो गया।

''शहंशाह, ईश्वर सबसे दयालु है। दयालु ईश्वर स्वर्ग में कैसे रह सकता है जबकि उसका एक बच्चा गहरी मुसीबत में हो। क्या आप अपने प्रियजनों के आँसू पोंछने के लिए नहीं दौड़ पड़ते? यदि शहज़ादा मुसीबत में हो तो क्या आप खड़े देखते रहेंगे? अगर देश में बाढ़ आ जाए या सूखा पड़ जाए तो क्या आप लोगों को बचाने के लिए कदम नहीं उठाएँगे?'' बीरबल ने विनम्रता के साथ स्पष्ट कहा।

''ईश्वर का स्तर इंसान तक मत घटाओ,'' बादशाह तड़ाक से बोला।

तेनाली राम की कहानियाँ पढ़ें hindi.chandamama.com पर

"इंसान ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। इसलिए ईश्वर हर वक्त अपनी सृष्टि की एक पिता के कोमल प्यार के समान देखरेख करता है," बीरबल ने बहस की।

"मैं आश्वस्त नहीं हूँ। मुझे लगता है तुम हर समय ईश्वर को मदद के लिए धरती पर उतार कर उसे मूर्ख बता रहे हो," बादशाह ने दृढ़ता से विवाद को समाप्त करते हुए कहा। बीरबल इस घटना को भूला नहीं, उसने बहुत समय तक सोचा।

उसके दिमाग में एक विचार आया। वह राज्य के एक सबसे अच्छे मूर्तिकार के पास गया और उससे बादशाह के तीन वर्षीय पुत्र, शहज़ादे सलीम की उसके कद के समान, वज़न में हल्की सामग्री से मूर्ति बनाने की विनती की। इतनी हल्की कि उसे आसानी से उठाया जा सके। इतनी सुन्दर कि अगर कोई राजकुमार को पास से न देखे तो धोखा खा जाए।

"मैं अपनी तरफ से बढ़िया काम करूँगा। एक महीने बाद आइए मूर्ति तैयार मिलेगी," मूर्तिकार ने आश्वस्त किया।

एक महीना बीत गया।

हमेशा की तरह, बीरबल राजदरबार आया।

"बीरबल, पूर्णमासी है। रात नौ बजे मेरे साथ चलना। हम दोनों, केवल हम दोनों नौका विहार के लिए चलेंगे। नाव को नदी के बीचों बीच ले जा कर लंगर डाल दिया जाएगा। हम पूरा चाँद और तारों भरा आसमान निहारेंगे। इससे हमें शांति और सुकून मिलेगा।" बादशाह ने कहा।

"शहंशाह, क्या हम शहज़ादे को अपने साथ नहीं ले जा सकते? उसे चाँद को ताकना बहुत अच्छा लग सकता है; या वह पानी पर ऊपर नीचे झूलती नाव में हिचकोलों के मजे ले सकता है।"

"यह एक बहुत ही अच्छा विचार है। मैंने कभी यह सोचा ही नहीं," बादशाह सहमत हो गए।

बीरबल यह कहते हुए वहाँ से विदा हुए कि वह नौ बजे से पहले ही बादशाह के हुजूर में हाज़िर होगा। वह मूर्तिकार के घर गया और दरवाज़ा खटखटाया।

"बीरबल जी, नमस्ते," मूर्तिकार ने दरवाज़ा पूरी तरह खोला।

"क्या मूर्ति तैयार है?" बीरबल ने मूतिकार से पूछा।

दुष्टु दत्तू की कहानियाँ कॉमिक के रूप मे hindi.chandamama.com पर

"हाँ, बीरबल जी। वह यहीं है," मूर्तिकार कोने तक गया और उस पर ढके हुए कपड़े के एक टुकड़े को खींचकर हटाया।

बीरबल ने मूर्ति को ध्यान से देखा। "अह, यह बिलकुल ठीक दिखती है, मेरे दोस्त। धन्यवाद," बीरबल ने मूर्तिकार को पारिश्रमिक थमाया।

बीरबल मूर्ति उठाकर नदी के किनारे आया जो पास ही था। उसने पानी पर ऊपर नीचे हिचकोले खाती शाही नाव को पहचान लिया। एक संतरी पहरे पर था। उसने बीरबल को सलाम किया।

"प्रमुख नाविक कहाँ है?" बीरबल ने पूछा।

प्रमुख नाविक दरबारी को हाज़िरी देने दौड़ा आया और सर झुकाया।

"इस मूर्ति को नाव के मुख्य तल के एक कोने में रख दो," उसने मूर्ति नाविक को थमाते हुए उससे कहा।

नाविक ने उसे सावधानी से पकड़ लिया।

बीरबल ने उसका शुक्रिया अदा किया और चल दिया।

तकरीबन साढ़े आठ बजे बीरबल राजदरबार में हाज़िर हुआ। बादशाह शहज़ादे सलीम के साथ खेल रहा था। उसने कदमों की आहट सुनकर ऊपर देखा और बीरबल की तरफ ध्यान देते हुए कहा, "बहुत अच्छा, चलो अब हम चल सकते हैं।"

बादशाह, शहज़ादा सलीम और बीरबल शाही रथ पर सवार होकर नदी के किनारे पहुँचे। जल्द ही वे तीनों नाव पर चढ़ गए। वे नाव के मुख्य तल पर जाकर बैठ गए। पीछे की तरफ शहज़ादे की एक परिचारिका बैठ गई।

बादशाह ने नाविक को आदेश दिया। नाविक ने पतवार खींचना शुरू किया। पतवारें पानी पर छपछप करने लगीं और नाव अपने पीछे एक सफेद झागों की पूँछ छोड़ते हुए सतह पर तैरने लगी।

आसमान में पूरा चाँद बहुत ही शालीनता से तैर रहा था। "यह अपने आप में स्वर्ग है," बादशाह की आँखें आसमान पर थीं।

बीरबल ने अपना सर हिलाया। शहज़ादा सलीम कुछ समय तक खुशी से इधर-उधर घूमा फिर नींद आने लगी।

बीरबल का ध्यान उस पर गया तो बादशाह को बताया। उन्होंने कोमलता से शहज़ादे को

बालक भीम, आर्य और अन्य कॉमिक hindi.chandamama.com पर

उठाया और नाव के पीछे गए जहाँ बिस्तर लगा हुआ था।

बीरबल तेज़ी से उठ कर गया और मूर्ति पर पड़ा हुआ कपड़ा हटाया। उसने नाव खेने वालों में से एक से कहा, ''बादशाह चाहते हैं कि जब वे लौटकर आ जाएँ उसी क्षण यह मूर्ति नदी में गिरा दी जाए।''

''जी हुजूर!'' आदमी झुका।

बादशाह जल्दी ही दुबारा आ गया। थोड़ी दूरी से उसे मूर्ति दिखाई दी। मृदुल चाँदनी में उसे दिखाई दिया जैसे कि शहज़ादा सलीम नाव के किनारे पर झुका हुआ है।

क्या शहज़ादा चुपके से खिसक गया और लौट आया? इससे पहले कि वह लुढ़के और पानी में गिर जाए, उसे पकड़ने की चिंता में वह आगे दौड़ा। बादशाह के मन के भ्रम को न जानते हुए, नाविक ने वही किया जो बीरबल ने कहा था। उसने मूर्ति को उठाया और नदी में गिरा दिया। वह छपाक से सतह पर टकरायी और फिर डूब गयी।

बादशाह गुस्से में कँपकँपाया और शहज़ादे को बचाने के लिए पानी में कूदने लगा।

''आलमपनाह! शहज़ादा बिस्तर में है,'' बीरबल ने नरमाई से उनकी बाँह पकड़ते हुए कहा।

''तुम बेवकूफ हो! अभी एक मिनट पहले तुमने उसे शहज़ादे को नाव पर से फेंकते हुए देखा है। वह आदमी ज़िंदा भुनवा दिया जाएगा,'' बादशाह दुख से चिल्लाया।

''वह शहज़ादा नहीं था, लेकिन शहज़ादे की तरह दिखनेवाली मूर्ति थी।''

''इस गंदी चाल के पीछे कौन है?'' बादशाह गुर्राया।

''शहंशाह! करीब एक महीने पहले हमारी बहस याद है? आप सोचते हैं कि यह मूर्खतापूर्ण है कि ईश्वर मदद माँगने वाले हर भक्त की सहायता के लिए दौड़ पड़ता है? और आप यहीं हैं, आलमपनाह, बर्फ से ठंडे पानी में कूदने को तैयार, क्योंकि आपने सोचा कि नन्हा शहज़ादा खतरे में पड़ा है। अगर आप अपने बेटे के लिए यह करने के लिए तैयार हैं, तो ईश्वर मुसीबत के समय हमारी मदद के लिए क्यों नहीं दौड़ सकते, जो हम सबके पिता हैं?'' बीरबल के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान खेल गयी।

''तुम, बीरबल! तुम हमेशा अपनी बात सिद्ध करके रहते हो,'' बादशाह हँसा। वे नाव के तल पर अपनी सीटों पर बैठने के लिए वापस चले गए और खुरा होकर सुनहरे चाँद को देखने लगे।

बीरबल की कहानियों का आनन्द लें hindi.chandamama.com पर

चार
निर्भीक
खोई हुई
पायल-३
चित्रःगाँधी अय्या
कहानीःपद्म मोहनकुमार
उन्होंने संक्षेप में उमा के पिता को सब कुछ बता दिया जिसे वे धैर्य से सुनते हैं।
मैं चम्पी से बात करूँगा...
उमा, हम माली से पूछ सकते हैं कि क्या उसने यहाँ आस-पास किसी संदेहजनक आदमी को देखा...
हाँ, नहीं तो पायलें वापस मिल पाना मुश्किल हो जाएगा...
नहीं... मैंने किसी को भी उमा की माँ को बताए बिना अंदर नहीं जाने दिया...
क्या तुमने किसी को घर के अंदर घुसते देखा?
वे माली के घर के सायबान तक आते हैं और उमा के पिता उससे बात करते हैं।
कमरे में कोई नहीं था -उमा विद्यालय गई थी और श्याम कॉलेज...
साहब... मैं नहीं सोचता कि श्याम कॉलेज गया है...
क्या?

वह बाज़ार में किसी से बात कर रहा था...
क्या तुम्हें पक्का विश्वास है? श्याम पढ़ने क्यों नहीं जा रहा!
मैं नहीं जानता यहाँ क्या हो रहा है!
तुम मेरे साथ अंदर आओ। मैं श्याम से बात करूँगा।
जी, साहब।
जब श्याम घर आता है, वह अपने पिता को परेशान देखकर हैरान होता है।
डैड, मैं आपको सब कुछ बताने ही वाला था।
तुम बाज़ार में किससे बात कर रहे थे, श्याम?
उस आदमी ने थोड़े समय में ज़्यादा पैसा कमाने में सहायता करने का वादा किया है?
कैसे?
ऑनलाइन व्यवसाय, डैड। उसने बताया थोड़ा ही निवेश काफी है...
और तुम उसे रकम अदा करने की योजना कैसे बना रहे थे?

मैंने उमा की पायल देखी... मैंने सोचा मैं इसे बेच सकता हूँ। मैंने इसे बेचने में एक स्त्री को अपनी सहायता करने के लिए रिश्वत दी।
मुझे इस पर विश्वास नहीं। तुम ऐसा कैसे कर सकते हो, श्याम!
मुझे सच में बहुत दुख है। मैंने सोचा मैं उमा के लिए बाद में पायलें खरीद लूँगा।
तुमने परवाह नहीं की कि चम्पी को दोषी ठहराया जा सकता है!
तुम्हारे लिए इस तरह का मूर्खतापूर्ण कार्य करने की अपेक्षा अधिक ज्ञान सीखना अच्छा है।
और तुमने दूसरी पायल भी ले ली !
उसने जो वादा किया था वैसा कुछ नहीं किया।
डैड, उसने और पैसा माँगना शुरू कर दिया था...
क्या तुम उससे आज उसी के बारे में बहस कर रहे थे?
आओ, हम चलें और इस आदमी को देखेंगे।
मुझे याद है सुधीर अंकल हमें एक मक्कार के बारे में बता रहे थे... आप उनसे बात कर सकते हैं अंकल।

उमा के पिता सुधीर से फोन पर बात करते हैं।
श्रीमान वह आदमी एक धोखेबाज़ है। मैं वहाँ आ जाऊँगा।
जल्द ही, सुधीर अंकल और असिस्टेंट कमिश्नर आ जाते हैं।
श्याम, हमें उसके पास ले चलो, हम उसे आसानी से पकड़ सकते हैं।
वे बाज़ार जाते हैं।
हम यहाँ खड़े होंगे। तुम जाओ और उससे बात करो, श्याम।
जब श्याम उस आदमी से बात करता है, बाकी सब देखते हैं।
हाँ, यही वह आदमी है। मैं उसे गिरफ्तार करूँगा।
आदमी पुलिस देखकर भागता है।
जल्दी, जोजो उस आदमी को रोको!
जल्दी ही...
तुम पैसा लेकर भागने की योजना बना रहे थे, क्यों है न?
बहुत-बहुत धन्यवाद बच्चो।
श्याम, मैं आशा करता हूँ तुमने सबक सीख लिया है।
समाप्त

हम बनायें भारत को आर्थिक-विकास में शक्तिमान

हमारी यह भी पहचान :

• हम हैं, दुनिया के वृहदतम कोयला उत्पादक कम्पनी, जिसका भारत में कोयले के समग्र आउटपुट में 82% सहयोग • जो पूरी करे, भारत की बुनियादी व्यापारिक ऊर्जा की 46% माँग • जो देश में बिजली उत्पादान में 55% मददगार • जो देश के 77 पावर स्टेशन में से 75 पावर स्टेशन में करे कोयला सप्लाइ • जो देता है कोयला, अन्तर्राष्ट्रीय कीमत के मुक़ाबले ज़्यादा रियायती कीमत पर और बनाता है इसे एंड-यूज़र उद्योग को विश्व-स्तर पर प्रतिस्पर्धायोग्य। • जो देता है, राष्ट्रीय कोष को प्रति वर्ष, लगभग 6000 करोड़ रु. का योगदान।

कुल मिलाकर
हम भारत को बनायें शक्तिमान

कोल इण्डिया
Coal India

कोल इण्डिया लिमिटेड

एक नवरत्न कम्पनी

वेबसाइट : www.coalindia.nic.in

CHANDAMAMA (Hindi) November 2009 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CH(C)/217/09-11
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/09-11, Foreign No. 93/09-11